लिपि प्रकाशन

लेखक के अन्य चर्चित नाटक

'मरजीवा'
'टिलचट्टा'
'तेंदुआ'
'योर्स फेथफुली'
'आला अफसर'
'मालविकाग्निमित्र और हम
'सन्तोला'

गुफाएं

मुद्राराक्षस

© 1979 : मुद्राराक्षस, लखनऊ

प्रस्तुत नाटक के प्रदर्शन, प्रसारण, अनुवाद या किसी भी प्रकार के इस्तेमाल के लिए लेखक की लिखित रूप में पूर्व-अनुमति आवश्यक है।

पता : मुद्राराक्षस, ए-206, रामसागर मिश्र नगर, लखनऊ-226001.

मूल्य : बारह रुपये

प्रथम संस्करण : 1979

प्रकाशक

लिपि प्रकाशन

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, दिल्ली-32.

GUFAEN

By Mudra Rakshas

Play Rs.12.00

एम० के० रैना

और

बंसी कौल को

प्रथम प्रस्तुति
लखनऊ, 1977
'दर्पण' के लिए उर्मिलकुमार थपल्याल
द्वारा निर्देशित

पात्र :

अनन्त : विमल बैनर्जी
लिली : कुमकुम धर

रंग रचना

निर्देशक और नाटककार के बीच झगड़ा या एक दूसरे से शिकायतें अक्सर चलती रही हैं। निर्देशक की शिकायत रही है कि लेखक उसे अपने आलेख में फेर बदल नहीं करने देता और नाटककार की शिकायत रही है कि निर्देशक उसकी स्वायत्तता में दखल देता है।

यह झगड़ा योरप में बहुत पहले शुरू हो गया था। इस सदी के शुरू में ही गार्डन क्रेग ने लेखक को अस्वीकार करके उसके कोमल हृदय पर लात जमाई थी / हालांकि इसका स्पष्टीकरण बाद में करूंगा। आगे चलकर ग्रातास्की ने लेखक के विरुद्ध फैसला ही सुना दिया।

मजे की बात तो यह है कि इससे और कोई नहीं सिर्फ़ लेखक ही दुःखी होता रहा और यही नहीं, नाटक लिखने से बाज नहीं आया। एक रोचक बात यह कि लेखक लिखता रहा और उसकी रचनाओं के मंच प्रस्तुतीकरण होते रहे।

तो क्या सचमुच वे निर्देशक ग़लत थे जो लेखक के विरुद्ध बोल रहे थे ? क्रेग ने यही नहीं कहा था कि मंच पर लेखक का कोई काम नहीं। उसने यह भी कहा था कि मंच पर चित्रकार का, संगीतकार का भी कोई काम नहीं।

आमतौर पर, खासतौर से विश्वविद्यालयों की अपनी नीतियों के अनुसार नाटक का आलेख अपने आप में एक स्वायत्त सत्ता बन गयी। यह सिर्फ़ इत्तफ़ाक ही है क्योंकि लिखित होने के कारण और स्वतंत्र रूप से सशक्त विधा अभिनय, प्रस्तुतीकरण या रंगदीपन के तुरन्त नष्ट हो जाने के कारण नाटक का आलेख ही अध्ययन के लिए बच रहा है। जहां यह नहीं है मसलन फिल्मों में, वहां बेहतरीन आलेख होने के बावजूद

आलेख अध्ययन का केन्द्र नहीं बन पाया। फ़िल्म अपनी समग्रता में ही अधीत की जाती है। नाटक, अभिनय या मंचन के बाद बुश्शर्ट पहने हैमलेट, से लेकर उखड़े तख्तों, खपच्चियों और नोचे गए बालों का एक ढेर भर रह जाता है। उसमें आलेख के अलावा और कुछ भी स्थायी नहीं रह जाता जिसका अध्ययन किया जा सके। इसी के साथ अभिनेता या निर्देशक के पास जहां मुश्किल से समीक्षक की लिखी एकाध अखबारी कतरन या छायाचित्र ही बचते हैं वहां लेखक बाद में बड़ी शान से अपनी पूरी किताब छपा सकता है और बरसों उसका आनन्द अनुभव कर सकता है।

क्रेग ने जो कुछ कहा है उसका मतलब सिर्फ़ इतना है कि लेखक, चित्रकार, संगीतकार की अपनी स्वायत्त दुनिया भी होती है। मंच न तो साहित्यिक गोष्ठी होती है न संगीत-सभा और न ही आर्ट-गैलरी। मंच एक ऐसी स्वायत्त और स्वयंसम्पूर्ण विधा है जो बहुत-सी चीजों के संयोग से बनी है, यह सोचना गलत है।

आमतौर पर एक भयानक भूल लोग करते रहे हैं कि वे रंगमंच को अनेक कलाविधाओं का मजमुआ मानते रहे हैं। यह भारी भूल है और रंग-मंच को न पहचानने के कारण पैदा होती है। यह उतना ही भ्रष्ट वक्तव्य है जितना यह कहना कि साहित्य एक अदद कलम, छापाखाना, बुक-बाइंडर और कागज़ का सम्मिलित रूप है। नाटक अनेक कलाओं, अनेक स्वायत्त रचनाविधाओं पर निर्भर कला प्रारूप नहीं होगा। नाटक में लेखन, चित्रकला संगीत आदि की खोज ठीक उसी तरह की जा सकती है जैसे किसी इमारत के कंगूरों में लय, उसकी छतों पर जमे धुएं में उसमें रहने वालों का इतिहास और उसके उखड़े पलस्तर में जानवरों की आकृतियां देख ली जाएं।

नाटक अपने आपमें एक स्वायत्त विधा है जिसमें इत्तफ़ाक से ही उसकी रचना प्रक्रिया के दौरान श्रम विभाजन स्वीकार कर लिया गया है जो कतई आवश्यक और अनिवार्य नहीं है। मैं नाटककार का काम उस नक्शानवीस का काम मानता हूं जो अपने आपमें इत्तफ़ाकन ही कोई दर्शनीय वस्तु बन सकता है।

अपने एक नाटक की भूमिका में पहले भी मैं इस झगड़े का जिक्र कर चुका

हूं और वहां जो लिख चुका हूं वह ऊपरी तौर से देखने पर मेरी ऊपर कही बात के विरुद्ध लग सकता है। लेकिन यह ऊपरी तौर पर ही है। अक्सर किसी नाटक के आलेख में दो आवश्यकताओं के कारण परिवर्तन किए जाते हैं एक तो किसी दृश्य विशेष को अच्छा लिखा गया न मानने के कारण और दूसरे नाटककार की दृष्टि या विचार विशेष से असहमति के कारण।

ये दोनों कारण सिर्फ़ उस निर्देशक की सीमा से पैदा होते हैं जिसे अपना नाटक नहीं मिल पाता। जिस आलेख में संवाद, घटनाओं और नतीजों तक में फेरबदल करनी पड़े वह नाटक चुनना निर्देशक की भूल होती है लेखक की नहीं।

आशा करता हूं कि अभी इन बातों पर न तो कोई नतीजा निकालने की कोशिश की जाएगी और न ही इन पर जल्दबाज़ी में कुछ सोचा जाएगा। इस विषय से जुड़ी बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनका स्पष्टीकरण और भाष्य ज़रूरी है।

नाटककार के नाट्य लेखन में और किसी भी रचनाकार के उपन्यास, कहानी या कविता लिखने में क्या फर्क होता है, और क्या नहीं होता? कुछ लेखकों को मैंने कहते सुना है कि वे रंगकर्मियों से मिलना, बात करना चाहते हैं और उनसे विचार-विमर्श करके एक-एक दृश्य लिखना चाहते हैं। यह प्रक्रिया ग़लत है। नाटककार अपने दृश्यों और चरित्रों के बारे में मंचकर्मियों से बहस करे यह निहायत ग़ैरज़रूरी प्रक्रिया है। नाटक भी वह ठीक उसी तरह अकेले, अपनी मेज़ पर सीमित होकर लिख सकता है जैसे वह कविता लिखता है। लेकिन एक शर्त बहुत ज़रूरी होती है। रंगकर्मियों की जमात का एक मूल सदस्य उसे होना होगा। यह पहली और सबसे बड़ी शर्त है। जिस तरह दृश्यबंध की परिकल्पना करने वाला या रंगदीपन करने वाला या रंग-प्रबंधक रंगकर्मी जमात का मूल सदस्य होता है उसी तरह उसे भी होना पड़ेगा।

ऐसा लेखक जो रंगकर्मियों की जमात का सदस्य है लिखते वक्त कल्पना मात्र नहीं करता, उपलब्ध साथी रंगकर्मियों का उपयोग करता है। उसे न सिर्फ़ अपने अभिनेता-अभिनेत्री मित्रों की क्षमताएं और सीमाएं पता होती हैं बल्कि चुनौती स्वीकार करने की उनकी प्रवृत्तियां भी मालूम होती

हैं। अक्सर निर्देशक विशेष या कलाकार विशेष के लिए भी नाटक लिख दिया जाता है। कभी-कभी मंडली की तात्कालिक ज़रूरत उसकी सामाजिक नाटक लिखने की प्रवृति से मोड़कर उसे ऐतिहासिक नाटक लिखने को मजबूर कर सकती है।

ऐसे नाटक में फेरबदल लेखक स्वयं भी करता है। वैसे यह सच है कि इस तरह लिखे नाटक में परिवर्तन-परिवर्धन की गुंजाइश नहीं के बराबर ही होती है।

हां यह ज़रूर है कि कभी-कभी कोई निर्देशक स्वयं नाटककार भी बनने की कोशिश करने लग जाता है। यानी उपलब्ध नाटक को अनिवार्यता के कारण नहीं अपनी महत्त्वाकांक्षा के कारण दुबारा लिखना चाहता है। यह न सिर्फ़ गलत है बल्कि निर्देशक के पद को छोटा करने वाली आदत है। जिस तरह निर्देशक के लिए सेट पर लगाए गए बढ़ई से ज्यादा अच्छी तरह आरी-बसूला चला सकने की ज़रूरत नहीं होती उसी तरह उसे इसकी ज़रूरत भी महसूस नहीं होनी चाहिए कि किसी दृश्य को वह लेखक से बेहतर लिख सके।

निर्देशक का काम बहुत बाद में ही साफ़ हो पाया है। ज्यादातर तो उसकी जगह सिर्फ़ व्यवस्थापक ही हुआ करता था। संस्कृत काव्यशास्त्र में अभिनय का भाष्य है, लेखन का है यहां तक कि रंग व्यवस्था तक का जिक्र है। रंग निर्देशन वहां भी कला नहीं है। योरप में भी इस सदी की शुरूआत के बाद ही लोगों को कुछ-कुछ यह समझ में आने लगा कि निर्देशक रंग-प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया में बहुत महत्त्वपूर्ण अस्तित्व होता है।

भारत में लोकनाट्य नौटंकी (गोकि नौटंकी को मैं लोकनाट्य नहीं मानता) में भी मैनेजर ही महत्त्वपूर्ण रहा है। पारसी रंगमंच में आग़ा हश्र ने खुद थोड़ी-सी जिम्मेदारी निर्देशक के तौर पर निभाई।

जो भी हो इसमें सन्देह नहीं कि मुश्किल से साठ-पैंसठ साल पहले पैदा हुई इस नई कला-नाट्य निर्देशन ने न सिर्फ़ अकल्पनीय तीव्रता से विकास किया है बल्कि अत्यन्त प्राचीन रंगलेखन, रंगाभिनय, रंगदीपन, रंगसज्जा और रंगशाला को अपने से जोड़कर, अपने नीचे अनुशासित करके एक स्वायत्त कला संसार बनाया है।

रंगक्रिया निस्सन्देह निर्देशक के अवतार से पहले बहुत-सी कलाओं की खिचड़ी थी। वह उस दिन से एक अलग स्वतंत्र कला बन गई जिस दिन से निर्देशक ने यहां कदम रखा। उसी दिन से रंगलेखन या नाटक का आलेख भी स्वतंत्र सत्ता न होकर इसी समग्र क्रिया का अंश हो गया।

ऐसा लग सकता है कि यह नाटककार की प्रतिष्ठा पर हमला है। दर-असल यह उसी की प्रतिष्ठा पर हमला नहीं अभिनेता आदि दूसरे सभी की प्रतिष्ठा पर हमला है लेकिन यही वास्तविकता है। इसे स्वीकार न करना नए रंग आन्दोलन से अपने आपको काटना होगा।

निर्देशन की परिभाषा अब तो काफी की जा चुकी है। भारत में भले ही अभी निर्देशन को अभिनय आदि कई कलाओं के सम्मिलित ज्ञान का मोटा-सा प्रारूप समझा जाता है। जिस तरह नाटक कई कलाओं की खिचड़ी नहीं है उसी तरह निर्देशक होना भी हरफनमौला होना नहीं होता।

खेद की बात तो यह है कि योरप में भी नाट्य निर्देशन की जो परिभाषाएं दी गई हैं उनमें आमतौर पर यही कहा गया है कि निर्देशक को क्या करना होता है। वह क्या करता है, क्या नहीं करता यह भी बताया गया है और कितने ढंग से करता है यह भी लिखा जा चुका है। लेकिन निर्देशक की रचना प्रक्रिया पर अलग से लगभग नहीं के बराबर ही कहा गया है।

क्या वह मंडली में दूसरे से बेहतर और दूसरे सभी लोगों के काम का जानकार एक समर्थतर व्यक्ति भर ही होता है? और क्या सचमुच निर्देशक अपने सहकर्मियों से अनिवार्यतः बेहतर कलाकार होता है? और क्या वह सिर्फ यह पहेली ही हल करने के लिए होता है कि हैमलेट में भूत दिखाने के लिए क्या किया जाए? क्या वह मंच और दर्शक के बीच सम्प्रेषण का दलाल होता है?

एक नाकाफ़ी सा शब्द बहुत हद तक निर्देशक के काम का या उसकी विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है वह है— भाष्यकार। लेकिन, जैसा कि मैंने शुरू में ही कहा, यह शब्द नाकाफ़ी है।

अब में एक ऐसी बात कहने की इजाजत चाहूंगा जो शुरू में थोड़ा अटपटी ही नहीं अनोखी भी लग सकती है। लेकिन चूंकि निर्देशन नाम की कला की परिभाषा अभी तक कहीं किसी ने नहीं की इसलिए इस काम को उठाते

हुए थोड़ा-सा ख़तरा उठाना ज़रूरी है।

नाटक संबंधी हर विधा की विस्तृत परिभाषाएं हैं और आम तौर पर इतना कह कर छुट्टी पा ली गई है कि निर्देशक का काम है समूचे प्रदर्शन में लयात्मकता पैदा करना। अभिनय, आलेख, दृश्यबंध आदि में सामंजस्य पैदा करना आदि। ये सारी बातें सतही हैं। सिर्फ़ ऊपरी तौर पर ही ऐसा लगता है कि निर्देशक यह सब करता है और चूंकि निर्देशन की परिभाषा कभी की ही नहीं गई इसलिए इसी बात को विश्वास के साथ बलपूर्वक दुहराया भी जाता रहता है।

दरअसल समूची रंगप्रक्रिया में लगी नाटक मंडली में निर्देशक एकमात्र ऐसा व्यक्ति होता है जो बाहरी आदमी माना जा सकता है। रंगप्रस्तुति का वह प्रथम दर्शक होता है और प्रथम दर्शक होने की योग्यता के अंदर ही हम उन चीज़ों को तलाश कर सकते हैं जिन्हें निर्देशन कला के आधारभूत सिद्धांत कहा जा सकता है।

नाटक का प्रथम दर्शक होना और मंडली में एकमात्र बाहरी आदमी होना निर्देशक का चरित्र होता है। और इसी चरित्र में उसकी अपनी कला को पहचानना चाहिए।

निर्देशक दर्शक दीर्घा में बैठता है और एक लम्बे अरसे के दौरान अभिनेता-अभिनेत्रियों, रूपसज्जाकार और दृश्यबंधकारों, संगीतज्ञों और रंगदीपकों को दिए हुए एक आलेख के दायरे में ज़ाहिरा तौर पर कहां, क्या और कैसा करना है यह बताता है। लेकिन यह बताना या बता सकना उसकी कला का बाहरी रूप होता है। दरअसल प्रस्तुतीकरण की उस लम्बी तैयारी के दौरान रंगमंच पर प्रस्तुतीकरण का अन्तिम रूप आने से पहले ही उसे देख सकना, नाटक का पूर्वाभ्यास शुरू होने से पहले ही पूर्णताप्राप्त प्रस्तुति का प्रथम दर्शक बन सकने की क्षमता निर्देशक की कला होती है। और अपनी इस योग्यता में वह इतना प्रवीण होता है या उसे इतना प्रवीण चाहिए कि अभिनेता द्वारा पहला संवाद बोले जाने पर ही वह यह बता सके कि जो प्रदर्शन वह देख रहा है उसमें अभिनेता द्वारा किए अभिनय के प्रारंभिक अंश से वह कितना ऊपर या नीचे है। मंडली के अन्य किसी सदस्य को इस योग्यता की ज़रूरत नहीं होती। हां, नाटककार एकमात्र एक

और ऐसा व्यक्ति होता है जो प्रस्तुतीकरण का एक काफ़ी कच्चा रूप देखता है लेकिन उतनी पूर्णता और कलात्मक बारीकी वाली प्रस्तुति वह भी नहीं देखता जितनी निर्देशक देखता है।

पूर्णांग प्रस्तुति के प्रथम दर्शन की इस प्रक्रिया को थोड़ा विस्तार से समझना होगा। नाटककार किसी विशेष देश, काल और परिस्थिति के बीच कुछ ऐसे व्यक्तियों की कल्पना करता है जिनके पारस्परिक और देश-काल सापेक्ष रिश्तों के ज़रिए नाटकीय घटना बनती है। निर्देशक सिर्फ़ उस परिकल्पना की पुनर्रचना नहीं करता। वह उस परिकल्पना के वे अर्थ खोजता है जिन्हें लेकर अन्ततः दर्शक को घर लौटना होता है। लेखक पात्रों को एक भव्य महल में दिखा सकता है। महल की भव्यता की अगर कोई नाटकीय सार्थकता है तब तो ठीक है वरना दर्शक को सिर्फ़ इतना भर लेकर लौटना है कि राजा का महल भव्य था। इतने भर के लिए निर्देशक भव्य महल का दृश्यबंध गैरज़रूरी मानेगा और भव्यता का एहसास किसी अन्य साधन से खोजेगा। इस तरह बिना भव्य दृश्यबंध के जो भव्यता का एहसास वह खुद करेगा उसे बाद में आए दर्शकों के लिए छोड़ जाएगा। छोड़ते वक्त मंडली के सदस्यों को इस तरह बांध देगा कि वे उक्त एहसास पैदा कराने वाले प्रस्तुतीकरण को ही पेश करें।

इस तरह निर्देशक की सबसे बड़ी कला यह होती है कि वह दर्शक के नाट्यबोध की पूर्वरचना करता है।

यह बात निश्चय ही संस्कृत के रससिद्धान्त से थोड़ी उल्टी पड़ती है। रससिद्धान्त के अनुसार पूर्णता को प्राप्त अभिनयादि के ज़रिए जो रसपरिपाक होता है उसका आस्वादन किया जाता है। आधुनिक रंगनिर्देशक इससे उल्टा काम करता है। वह अपने आस्वादन को ही धीरे-धीरे करके रससिद्धि की सीढ़ियों पर उतारता है। आस्वादन परिपाक के बाद नहीं—पहले, यह रंग निर्देशक की कला है। अपना आस्वादन करने के बाद निर्देशक भाव, विभाव, संचारी आदि को खोजना-जुटाना शुरू करता है। रससिद्धान्त के प्रति धार्मिक आस्थावाले लोगों को यह बात पचेगी नहीं यह मैं जानता हूं।

यहां मैं अनुष्ठानधर्मी नाटकों की ओर ध्यान खींचना चाहूंगा। मन्दिरों में खेले जाने वाले इन नाटकों या किसी हद तक नाटकीय धर्मा-

नुष्ठानों का नियामक धर्मगुरु होता है और वह उस अनुष्ठान से संबंधित आध्यात्मिक सत्य का प्रथम दृष्टा भी होता है। अनुष्ठान के संचालन में वह अपनी उसी पूर्वदृष्टि का प्रतिफलन देखता है।

निर्देशक की सीमा या अक्षमता भी उसके समर्थ प्रथम दर्शक होने या मंडली के बाहरी आदमी होने की अक्षमता ही होती है। निर्देशक बजाय इसके कि वह प्रथम दर्शक हो, अक्सर पहला लेखक, पहला अभिनेता, पहला दृश्यबंधकार आदि होने की कोशिश करने लगता है। यहीं वह मार खा जाता है। वह अभिनेता हो ज़रूर जाता है लेकिन उतने क्षणों के लिए उसकी पूर्णांग प्रस्तुति की परिकल्पना धुंधली हो जाती है। इस तरह वह उस पूर्ण नाट्यबोध की संरचना करने में स्खलित हो जाता है जिसे वह अपने बाद के दर्शकों के लिए छोड़ना चाहता है।

निर्देशक राजेन्दरनाथ की प्रस्तुतीकरण प्रक्रिया को देखकर मेरे मित्र पाल जेकब ने कहा था—वह पूर्वाभ्यास की अध्यक्षता करता है। मुझे लगता है, निर्देशन की सूक्ष्मतर प्रक्रिया यही होती है।

सृजनधर्मी आधुनिक रंगनिर्देशकों ने रंगमंच में जो नए काम किए और उनसे नाट्यबोध में आए बड़े अन्तर का थोड़ा-सा जिक्र भी ज़रूरी है। कुछ निर्देशकों ने रंगक्रिया को रंगमुख से बाहर लाने की कोशिश की और उन्होंने प्रस्तुतीकरण को काफ़ी हद तक बल्कि चमत्कृत करने की एक सीमा तक भी बदला और प्रभावित किया।

रंगमुख या रंगपीठ छोड़कर अभिनेताओं को दर्शकों के बीचोबीच ले आया गया। कभी रंगपीठ ही वहाँ तक खींच लाया गया और कभी दर्शकों को ही रंगपीठ पर जगह दे दी गई। स्वयं रंगपीठ और रंगशाला के स्वीकृत रूप भी अक्सर अस्वीकृत कर दिए गए और किसी भी जगह यहाँ तक कि व्यायामशाला, कारमरम्मत का कारख़ाना या ऐसी ही कोई जगह चुन ली गई जहां प्रस्तुतीकरण के लिए दृश्यबंध और साजसज्जा के लिए वहीं की चीज़ें इस्तेमाल की गईं।

इन प्रयोगों के पीछे दो मुख्य उद्देश्य रहे हैं पहला यह कि रंगकर्मियों और दर्शकों के बीच फासला कम हो या लगभग टूट जाए और दूसरा यह कि नाट्य प्रस्तुति का जो रूप रंगमुखी मंच पर एक तस्वीर की तरह दिखाई

देता है वह दर्शकों के बीच आकर तीनों आयाम स्पष्ट कर सके।

इनमें से पहला उद्देश्य अधिकांशतः वहम है। प्रस्तुति और दर्शक के बीच दूरी की समाप्ति का यह नकली और प्रभावहीन साधन है। दर्शक हर स्थिति में तब तक प्रस्तुति से बाहर, उससे असंपृक्त रहता है जब तक प्रस्तुत वस्तु से उसकी अपनी जीवन पद्धति पर कहीं आघात नहीं होता। यह आघात रंगमुख के उस पार से भी किया जा सकता है और इस पार से भी।

लेकिन इन प्रस्तुतियों का दूसरा उद्देश्य बहुत महत्वपूर्ण और काम का होता है। अपनी प्रस्तुति को तीन आयाम देने वाला निर्देशक दरअसल ऐसा एक खास मकसद से करता है। तीन आयाम देना और तीन आयामों का होना दर्शक को महसूस कराने का मकसद उसकी निर्देशन कला के नए आविष्कार से जुड़ा होता है।

आम तौर पर रंग प्रस्तुति सभी दर्शकों के लिए एक जैसी दिखने वाली और एक समय में समूची मंडली के क्रियाकलापों को एक बार में एक करके पेश करने वाली होती है। यानी अगर मंच पर ओ'नील की रचना 'लांग डेज़ जर्नी इंटु नाइट' पेश की जा रही है तो उसमें पति-पत्नी के घात-प्रतिघात के वक्त दूसरे कमरे में उनके बेटे क्या कर रहे हैं या क्या बोल रहे हैं, यह नहीं दिखाया जाएगा। ज्यादा से ज्यादा उनकी बात उस वक्त सुनवाई जा सकती है जिस वक्त पति-पत्नी खामोश हो चुके हों। इसका अर्थ यह हुआ कि मंच प्रस्तुति (रंगमुखी) के समय दर्शक एक वक्त में एक ही बात या घटना से साक्षात् करता है।

नाटक के प्रस्तुतीकरण की यह पद्धति नाटक को किसी हद तक जीवन के यथार्थ से अलग कर देती है। जीवन में हम अक्सर किसी घटना के वैसे ही गवाह नहीं होते जैसा कोई दूसरा होता है। मस्लन सड़क पर होते हुए किसी झगड़े में छत पर खड़े हुए हम नीचे की घटनाओं को तो लगभग उन्हें समझे-पहचाने बिना देखते हैं लेकिन छत पर ही खड़े नीचे के झगड़े में प्रवृत्त किसी व्यक्ति के संबंधी या मित्र की क्रिया-प्रतिक्रिया नजदीक से देखते हैं।

प्रस्तुति की आम रंग पद्धति में यह नहीं होता। मंच पर दिखाई जाने वाली घटना का हर दर्शक समान और एकरूप साक्षी होता है। मंच के

इस नकलीपन को निर्देशक ने तोड़ने की कोशिश की है और इसका सबसे समर्थ उपाय उसने मंचपीठ से नाटक को बाहर लाकर खोजा है। इस तरह दर्शक नाटक को जीवन खंड के रूप में देखता है। और इस प्रस्तुतीकरण में हर दर्शक अलग-अलग अनुभव खंड प्राप्त करता है। उनका आस्वादन दरअसल आस्वादन से हटकर घटना की एक संयुक्त गवाही का रूप ले लेता है। उदाहरण के लिए वही नाटक 'लांग डेज़ जर्नी इंटु नाइट' जिस वक्त व्यायामशाला में किया जाएगा उस वक्त दोनों लड़के ही नहीं, माता-पिता भी मंच पर मौजूद हो सकते हैं और उन दो युगलों में से एक बार में एक के बीच ही संवाद और अभिनय न होकर दोनों के बीच एक साथ भी हो सकता है।

शरीर का भाषा के रूप में इस्तेमाल बहुत पुराना है। जिसे शास्त्रीय शब्दावली में नृत्य कहा गया है उसमें शरीर के माध्यम से ही वाक्य को व्यक्त किया जाता है। लेकिन भारत में यह इतनी जड़ और भोथरी पद्धति रही है कि कलाकार या तो यह बता सकता है कि वह मक्खन चुराने के बाद पिट रहा है या नदी में गिरी गेंद निकाल रहा है। समसामयिक जटिल जीवन स्थितियों को व्यक्त करने में भारतीय नृत्य खेदजनक असमर्थता दिखाता है। पश्चिमी नृत्य पद्धति इसकी तुलना में अधिक सक्षम और समर्थ है। योरप में आपेरा और बैले ने शरीर की इस भाषा को इतना समर्थ बना दिया है कि वह आधुनिक कविता के समानान्तर अभिव्यक्ति-सक्षम हो चुकी है।

शरीर की भाषा का यह प्रयोग नाटक में भी आया। वहां वह इसलिए भी आया कि आधुनिक रंग प्रक्रिया की बहुत जगह शुरूआत राजकीय बैले या सामूहिक नृत्यों से हुई। फ्रांस इसका एक बड़ा उदाहरण है। यहां मार्था ग्राहम की नई नृत्य शैली का जिक्र भी ज़रूरी है जिसमें शरीर ही नहीं शरीर समूह भी सामूहिक रूप से भाषा बनते हैं और यही नहीं बल्कि उसके परिधान उस भाषा को और अधिक गहराई से नियमित करते हैं। मसलन धातु के पतले-मोटे नलों के टुकड़े कपड़ों की जगह पहन लेने के बाद नर्तकों के शरीर में आए गतिरोध से गति के नए आयाम की खोज।

मानव शरीर एक निश्चित ढंग के आकार की इकाई होता है। मसलन

हाथ-पैर, धड़, चेहरा---ये सभी अभिनेताओं में होते हैं। उनका आकार भी एक जैसा ही होता है। इसलिए शरीर संचालन द्वारा पैदा होने वाले बिम्बों की भी एक सीमा होती है। इस सीमा को लांघने के प्रयत्न भी किए गए। मसलन अभिनेता या नर्तक पर बेहद लचीले रबर के रंगीन और कई बड़े-बड़े छेदों वाले खोल चढ़ा देने के बाद खोल के अंदर-ही-अंदर अंग चालन द्वारा नए बिम्ब उत्पन्न किए गए। इस तरह एक व्यक्ति का शरीर लगभग उस सूक्ष्म अमीबा के विराट रूप की तरह हरकत करने लगा जिसका अधिकांश भाग तरल होता है और जिसका एक नियत आकार कोई नहीं होता।

ध्यान रहे कुछ लोग शरीर-भाषा के इस प्रयोग को गलती से आशिल्पन (स्टाइलाइज़ेशन) मानने लगते हैं। यह आशिल्पन नहीं है। आशिल्पन की व्यापक परिभाषा करने की यहा गुंजाइश नहीं है। फिर भी इतना समझ लेना होगा कि आशिल्पन का उद्देश्य होता है अभिव्यक्ति को इतना सीमित कर देना कि वह अपने देश-काल और व्यक्ति के रिश्तों से कट कर स्वतंत्र रूप ले सके। वहां उस शरीर-भाषा का अनुसंधान देश-काल-व्यक्ति के साथ उसी अभिव्यक्ति के हजारों सूक्ष्म रिश्ते खोजने के लिए किया जाता है।

आशिल्पन की भाषा में वृक्ष कोई भी एक वृक्ष होता है और उसे एक खड़ी रेखा के शीर्ष पर एक गोले या पान की जैसी आकृति से व्यक्त किया जाता है। यथार्थवादी भाषा में वह आम, नीम, फर या खजूर का दरख़्त हो जाता है लेकिन शरीर की भाषा में उसकी अभिव्यक्ति का अर्थ होगा वृक्ष विशेष के साथ आदमी के रिश्ते को पहचानना। मसलन वृक्ष का आदमी की तरह बूढ़ा हो जाना, आदमी के अर्थहीन जीवन की तरह बिना पत्तों के खड़े रह जाना या आदमी की नियति की तरह जमीन से ऊपर उठने की कोशिश में विकृत होकर उलझ रहना।

शरीर की इस भाषा का उपयोग बहुत जटिल और जिम्मेदारी का काम होता है। इसका अनावश्यक उपयोग प्रस्तुति को चमत्कार भले दे उसके अर्थ को धुंधला भी बनाता है। अक्सर वह अर्थ को विकृत भी कर देता है।

जैसे शब्दों की भाषा का असावधानी से किया प्रयोग घातक होता है

वैसे ही शरीर की भाषा का शिथिल, अनावश्यक, असंयमित प्रयोग खतरनाक होता है।

शरीर की भाषा के प्रयोक्ताओं का एक नया वर्ग इधर तैयार होने लगा है। इस वर्ग ने न केवल लेखक, चित्रकार और संगीतकार को रंग प्रक्रिया से बाहर किया है बल्कि काफ़ी हद तक निर्देशक को भी फालतू बना दिया है। इस वर्ग ने रंगप्रक्रिया को एक प्रकार का निजी अनुभव देने वाला वैयक्तिक अनुष्ठान बना दिया है। वह प्रस्तुतीकरण न होकर कलाकारों द्वारा एक कर्मकाण्ड की अनुभूतियों से गुजरने का माध्यम होता है। 'हेयर' इसी किस्म की एक रचना है और उसके प्रस्तुतीकरण के आलेख को पढ़ते हुए यह महसूस किया जा सकता है कि उक्त रंगप्रक्रिया का पहला उद्देश्य उसमें भाग लेने वाले लोगों का एक अनुष्ठान करके विभोर हो सकना होता है। ज़ाहिर है इस क्रिया में निर्देशक का प्रथम दर्शक होना जरूरी नहीं होता।

अब एक और बड़ा सवाल। क्या निर्देशक द्वारा पूर्वकल्पित या देखा गया भावी प्रदर्शन ही सभी दर्शक देखते हैं? या देख और समझ सकते हैं? दर्शकों के इस देखने का स्वरूप क्या होता है? इस समस्या को एक दूसरे सिरे से पकड़ने की कोशिश की जा सकती है।

दर्शक आम तौर पर दो वर्गों में विभाजित करके देखा जाता है। एक तो वह जो पढ़ा-लिखा, संस्कारी, कलाप्रेमी और सुरुचिसम्पन्न हो और दूसरा गंवार, अनपढ़, कुरुचि और सस्तेपन का ग्राहक हो। यह काल्पनिक भेद बहुत बड़े घोटाले और नासमझी का परिणाम है। यह भेद न सिर्फ़ नकली है बल्कि मूर्खतापूर्ण है।

बुद्धिजीवी की तुलना में प्रतीक और बिम्ब के माध्यम से कथ्य की पकड़ उस आदमी में कहीं ज्यादा होती है जिसे हम अपढ़ कहते हैं बशर्ते कि इन बिम्बों या प्रतीकों को कथ्य वहन करने के लिए बनाया गया हो, ये स्वयं कथ्य पर सवारी न गांठ रहे हों। यह कहना बिल्कुल गलत है कि आम आदमी को कलात्मकता की नहीं घटियापन की ज़रूरत होती है। आम आदमी अभिरुचि का घटियापन दो जगह दिखाता है—या तो वहां दिखाता है जहां वह ऐसी बात का सामना कर रहा हो जो उससे कहीं

जुड़ती ही न हो या फिर ऐसी जगह जहां आम आदमी को घटिया समझ कर उसे घटिया चीज़ दी जा रही हो।

दूसरी कलाओं की तरह नाट्यनिर्देशन भी धीरे-धीरे ही यथार्थवाद की तरफ आया और पिछले सौ बरसों में उसमें बहुत तेजी से परिवर्तन हुए। यह आश्चर्यजनक है कि हजारों बरस के इतिहास में वस्तुजगत जैसा दिखाता है वैसा दिखाने की कोशिश या प्रवृत्ति अभी डेढ़-दो सौ साल पहले आकर ही शुरू हुई। इससे पहले वस्तुजगत के प्रतिनिधि बिम्बों का इस्तेमाल ही होता रहा। मसलन अगर दो व्यक्तियों का युद्ध चित्र या कविता में दिखाया गया तो भी वह फोटोग्राफ़ी द्वारा पकड़ी तस्वीरों से अलग रहा और नाटक में दिखाया गया तो भी। रथ पर चलता हुआ राजा भी पैदल बिना रथ के मंच पर लाया गया और रथ वहां होने का अनुभव दर्शक ने किया।

इस प्रदर्शन पद्धति द्वारा निर्देशक का प्रथम प्रस्तुति देखना निश्चय ही मुश्किल काम रहा होगा। लेकिन इसमें आसानी सिर्फ़ इसलिए हो जाती होगी कि मंच पर अभिनेता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं होता था, मन्दकों वाली रोशनियां भी नहीं और दृश्यबंध भी नहीं।

प्रस्तुतिपूर्व प्रथम प्रस्तुति की परिकल्पना मंच सज्जा के साथ निश्चय ही थोड़ी आसान हुई। घर के किसी कमरे में बीमार की तीमारदारी करती औरत को कमरे की तमाम चीजों के साथ देख लेना उतना मुश्किल काम नहीं रहा। इसीलिए इस यथार्थवादी (या यथातथ्यवादी!) युग में रंगदीपन, दृश्यबंध, वेशसज्जा और अभिनय को स्वतंत्र रूप से भी विकसित कलाओं का रूप देना आसान हो गया और इसमें सन्देह नहीं है कि इस दौरान मंच की इन विधाओं में आशातीत काम हुआ।

लेकिन इसी के बाद निर्देशक को विद्रोह करना पड़ा और अपनी सत्ता या प्रभुता को बलपूर्वक रंगमंच पर हावी करना पड़ा। निर्देशक की इस क्रांति से पहले रंगमंच एक बार फिर अराजकता की ओर बढ़ा था। यानी हर सम्बद्ध कला ने अपनी स्वायत्तता से रंगप्रक्रिया को दबाना और एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश में उसे (रंगप्रक्रिया को) उसकी समग्रता में पीछे धकेल कर आवरणजीवी या ऊपरी तंत्र से बोझिल बना दिया था।

निर्देशक ने इस बार फैसला लिया कि किले के दृश्य में जबर्दस्त चित्रात्मकता वाले किले को कपड़े-लकड़ी और कीलों से खड़ा करने के बजाय कुछ कंगूरे या एक बुर्जी से ही दिखाकर काम चलाया जा सकता है। उसने यह भी सोचा कि विभिन्न दृश्यों को उनसे संबद्ध दृश्यबंधों की आवश्यकता से मुक्त करके प्रस्तुतीकरण में अधिक नाटकीयता (मैं यहां संगीतात्मकता या काव्यात्मकता जैसे बाहरी अनावश्यक प्रशंसामूलक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहता और यह भी चाहता हूं कि खुद रंगकर्मी नाहक कवि या संगीतकार को अपने से बड़ा मानने की कुंठा से बचें। मेयर होल्ड या रीनहार्ट किसी भी अर्थ में इलियट या वाग्नेर से कम नहीं हैं।) पैदा की जा सकती है, मसलन सिर्फ़ अलग-अलग आकार और ऊंचाई के चबूतरे और सीढ़ियां। फिर घूमने वाले या ऊपर से नीचे और आगे-पीछे खिसक कर बदलने वाले दृश्यों के अनावश्यक करतब से नाटकीय अनुभव को गहराई नहीं दी जा सकती भले ही वह चमत्कार पैदा कर सके। मंच के ही अलग-अलग क्षेत्र अलग-अलग दृश्यों का बोध करा सकते हैं।

निर्देशक ने अब नाटक को नए रास्ते पर डाल दिया था। उसने अपनी पूर्वकल्पित प्रस्तुति में यह भी देखा कि यथातथ्यवादी दृश्यबंध को हटाने के बाद बची हुई जगह पर वह प्रस्तुति के आन्तरिक चरित्र का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकात्मक आकार खड़े कर सकता है, मसलन पिघलता हुआ सूरज या गिरता हुआ खम्बा इत्यादि। वह टेलीफोन के तारों में उलझे हुए विकृत चांद को 'गोदो के इन्तज़ार में' जैसे नाटक के अन्तरंग अर्थ खोलने के लिए इस्तेमाल करना चाह सकता है।

निर्देशकों द्वारा रंगप्रक्रिया के साथ की गई इन यात्राओं को ज़रूर व्याख्याकारों ने नाम दिए हैं और ये नाम खासे प्रचलित भी हुए हैं। लेकिन मज़े की दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। पहली यह कि इस भाष्य की सारी शब्दावली नाटक की नहीं है बल्कि कला से उधार ली गई है। दूसरी बात यह कि यह भाष्य अक्सर सिर्फ़ दृश्यबंध के निर्माण की पद्धति देखकर ही किया गया है, मसलन प्रभाववादी, प्रतीकवादी, निर्मितिवादी, अभिव्यंजनावादी रंगशिल्प जैसे शब्द इसी बात को प्रमाणित करते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि इतनी सशक्त विधा की परिभाषा के लिए इस विधा की अपनी

भाषा तलाश नहीं की जा सकी। यह शायद इसलिए संभव नहीं हुआ कि समीक्षक प्रथम दर्शक बनने का अभ्यासी हो ही नहीं सकता। वह हमेशा मूर्त प्रस्तुति पर बात करता है और उसके बारे में वह उसी तरह बोलना चाहता है जिस तरह एक तस्वीर या फिल्म देखकर बोलता है। जो प्रथम दर्शक होता है उसे समीक्षा का या तो पर्याप्त अनुभव नहीं होता या उसे इतना समय नहीं मिल पाता।

एक बात इस सिलसिले में अब ज़रूर स्पष्ट करना चाहूंगा। आज जो रंग प्रस्तुतियां होती हैं उनमें शिल्पगत वह एकरूपता नहीं होती जो चित्रकला या साहित्य में होती है। अक्सर अब तक उपलब्ध बहुत-सी (और अक्सर परस्पर विरोधी भी) शैलियों के सम्मिश्रण का उपयोग रंग-प्रस्तुतियों में खुलकर होता है। उनमें थोड़ा-सा क्लासिकी आशिल्पन (स्टाइलाइज़ेशन) होगा तो थोड़ा-सा निर्मितिवादी प्रभाव भी होगा और यथार्थवादी मंच के भी थोड़े से तत्व झलक जाएंगे। अभिनय में भी आशिल्पन यथार्थपरकता और शरीर-भाषा निर्भरता के तत्व मिले-जुले हो सकते हैं।

दरअसल यह निर्देशक की कम समझी नहीं सघन अभिव्यक्ति की खोज में लगे उसके विवेक का ही सबूत होता है। सभी कलाविधाओं में रंगमंच एकमात्र ऐसी कला है जिसमें आदिकाल से लेकर आज तक खोजा गया कुछ भी बेकार या निर्जीव नहीं हुआ है। मुखौटे भी नहीं, रंगपट्टी भी नहीं, कुछ भी बेकार नहीं हुआ। और निर्देशक की कला इसीलिए और ज्यादा जटिल हो जाती है कि उसे एक बहुत ही विविधतापूर्ण और लम्बे-चौड़े, हजारों बरस भरते गए गोदाम से अपने उपयोग की चीज़ें निकालनी होती हैं।

रंगमंच की दुनिया में एक प्रतिभा मेयर होल्ड ऐसी है जिसने बलपूर्वक रंगप्रक्रिया को 'नाटकीय कला' कहा था। यह बड़ी बात है कि नाटक को नाटक कहने में उसे शर्मिन्दगी नहीं महसूस हुई क्योंकि इस कला की गुरुता की ईजाद करने का एक आत्मविश्वास उसमें था।

इसमें संदेह नहीं कि जहां और जितनी हद तक रंगप्रक्रिया नाटकीयता को ही कला प्रारूप के रूप में पेश कर सकी है वहीं नई और बड़ी उपलब्धियां की जा सकी हैं। इसका एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। यथातथ्यवादी दृश्यबंध अनाटकीय निर्मिति होता है। उसमें सिर्फ़ कच्चा माल

दूसरा होता है वाकी सब वही होता है जो दुनिया में कहीं भी हो। मसलन कमरे के अन्दर बिछावन, चारपाई, कुर्सी, रैक, अल्मारी तो होती ही है दीवारों और खिड़की-दरवाज़ों को भी वैसा ही बनाया जाता है जैसा घरों में रहने के लिए बनाया जाता है। इसीलिए इसमें नाटकीय कुछ भी नहीं होता। उस दृश्यबंध को ज़रूर नाटकीय कहा जाएगा जो क्रेग ने 'हैमलेट' के लिए बनाया था जिसमें एक चबूतरे के नीचे मेहराबदार गुफाओं का सिलसिला था और चबूतरे के ऊपर एक नीची मोटी दीवार और बीच में फासला छोड़कर एक बहुत ऊंची मोटी दीवार थी। यह नाटकीय दृश्यबंध इस अर्थ में कहा जाएगा कि इसे 'हैमलेट' के महल से नहीं उड़ाया गया बल्कि नाटक के अंदर से ही खोजकर निकाला गया था।

यही स्थिति रंगप्रक्रिया से जुड़ी दूसरी उपकलाओं की भी है। मसलन अभिनय में एक पद्धति यह है जो वास्तविक जगत के जीते-जागते मनुष्यों की भावावेगात्मक अभिव्यक्तियों का अनुकरण करती है। चोट खाकर पीड़ा ज़ाहिर करते व्यक्ति का मंच पर भी उसी स्थिति में वैसा ही अनुकरण किया जाए। यह कला का काफी प्रारंभिक रूप है। अभिनय अपनी गहराई पर उस वक्त उतरता है जब उसी अनुभव की अभिव्यक्ति में नाटकीयता की तलाश की जाती है।

इन उपकलाओं के बारे में एक दूसरी बात भी ध्यान देने की है। रंग निर्देशन की कला का विकास होने से पहले स्थिति यह आ गई थी कि मंच से संबंधित हर उपकला का जानकार अपनी कला की चरम उपलब्धि की स्वतंत्र खोज भी करता था। मसलन अभिनेता स्वयं भी अभिनीत पात्र की गहरी से गहरी परत खोलने की कोशिश करता था।

आधुनिक रंग निर्देशन कला के लिए उपकलाओं की यह स्वायत्त खोज ग़ैर ज़रूरी है। निर्देशन में अच्छे अभिनय की पूरी शास्त्रीय शर्तें निभाना तब तक ज़रूरी नहीं होता जब तक निर्देशक की परिकल्पित प्रस्तुति के बिगड़ने का ख़तरा न हो। एक औसत अभिनय भी उसके लिए काफी साबित हो सकता है। फिल्मों में अभिनेता चाहकर भी चरित्र की पूरी संगति निभा नहीं सकता। अगर आज उसे 'क' पात्र की मृत्यु के दृश्य का अभिनय करना है तो कल उसी की शादी का, और परसों उस

विवाह के लिए तैयार होने का। इस व्यतिक्रम के साथ किए गए अभिनय में भी उसके द्वारा खिंचाई समूची फिल्म या उक्त दृश्यों में किए उसके समूचे अभिनय को फिल्म कैमरा, फिल्म संपादक और अंततः निर्देशक कभी नहीं रखता। उसके कुछ अंश ही लेता है। भले ही बाकी अंशों में भी उसने बेहतरीन अभिनय क्यों न किया हो।

आधुनिक रंगनिर्देशक भी अभिनेता या अन्य उपकलाओं के गुणी लोगों के काम में आवश्यक सम्पादन करता है। यह निर्देशक इसलिए करता है कि अब उसे बहुत-सी उपकलाओं की उत्कृष्ट अदाकारियों की टोकरी नहीं पेश करनी होती है बल्कि अवयवी (आर्गेनिक) स्वभाव वाली नाट्यकला पेश करनी होती है।

अब तक नाट्यकला संश्लिष्ट (सिन्थेटिक) रचना हुआ करती थी लेकिन अब वह अवयवी (आर्गेनिक) कला हो चुकी है और उसके लिए यह आवश्यक नहीं रह गया है कि टांगें चलने के लिए हैं इसलिए पचास फुट लंबी भी हो सकती हैं और उंगलियां खासी काम की चीज़ होती हैं तो एक-एक हाथ में पचीसों उंगलियों के गुच्छे उगे हों।

रंग प्रक्रिया के इस अवयवी चरित्र को आधुनिक रंग निर्देशक ने जन्म दिया है और उसकी परिकल्पित प्रथम प्रस्तुति भी इसी अवयवी चरित्र के कारण संभव हो पाती है। जिस तरह किसी भी अवयवी जीव की पहली कोशिका में उस जीव के पूर्णांग होने के सारे तत्व, जीन्स और क्रोमोज़ोम्स के रूप में विद्यमान होते हैं ठीक उसी तरह निर्देशक द्वारा पूर्वकल्पित प्रस्तुति में भी होता है। आधुनिक रंग निर्देशक के लिए प्रस्तुतीकरण की समूची प्रक्रिया(पूर्वाभ्यास और दूसरी तैयारियां)जेनेटिक कोड को सुलझाने की एक प्रक्रिया ही होती है।

यह स्थिति नाटककार की कभी नहीं होती। वह ज्यादा से ज्यादा डिम्ब और शुक्राणु का संयोग करा सकता है लेकिन उस संयुक्त इकाई के जेनेटिक कोड को खोल नहीं सकता।

प्रस्तुत नाटक कुछ विचित्र स्थितियों में लिखा गया था। इसमें संदेह नहीं कि इसके लेखन के पीछे नाटककारीय मजबूरी या दबाव न होकर मेरे अपने मंचकर्मी का ही दबाव था। एक द्विपात्रीय प्रयोगात्मक प्रस्तुति

के लिए मैंने कुमकुम धर से वचन ले रखा था और उसमें अभिनय की काफी तैयारी भी उसने कर ली थी। दुर्भाग्य से उसके साथ उचितअभिनेता न मिल पाने के कारण मुझे उसके बजाय दूसरी अभिनेत्री को लेना पड़ा। कुमकुम की तकलीफ़ और उसके गुस्से का सामना करने के लिए यह एक द्विपात्रीय नाटक लिखा गया—'गुफाएं'। नाटक चूंकि मेरा ही लिखा हुआ था इसलिए इसे प्रस्तुति के लिए उर्मिल थपल्याल को देना मुझे उचित लगा।

यह मेरी अपनी धारणा है कि लेखक को स्वयं अपना नाटक नहीं करना चाहिए। अपने नाटक का सबसे खराब निर्देशक वह स्वयं होता है।

-- मुद्राराक्षस

गुफाएं

[इस नाटक में कई पात्रों की भूमिकाएं होने के बावजूद सिर्फ़ दो कलाकार ही अभिनय करते हैं। एक पुरुष, अधेड़ और भारी भरकम, तथा दूसरी एक किशोरवय की लड़की, सुन्दर और कोमल दिखने के बावजूद कभी-कभी जंगली बिल्ली की तरह डराने वाली।

पुरुष, अनन्त, बदमाशों के एक ऐसे दल का सदस्य है जो बच्चों का अपहरण करने के बाद उनके बदले फिरौती की रकम वसूल करते हैं। अनन्त की भूमिका दल में यह है कि वह अपहरण करके लाई लड़की को अपने यहां छुपा कर रखे, उसे भागने न दे और मौका आने पर उसकी उंगली या हाथ काट कर उसके घर भिजवा सके।

अनन्त नितान्त अकेला है और अब थकने लगा है। लिली खुद भी अकेली है, हालांकि वह एक बड़े उद्योगपति की बेटी है। उसकी मां भी है। आया और नौकर भी हैं। ड्राइवर भी है और परिवार के दूसरे मित्र भी हैं लेकिन फिर भी वह अकेली है क्योंकि उद्योगपति के परिवार में कहीं सम्पत्ति के दस्तावेज़ों को लेकर एक घिनौना अविश्वास पैदा हो गया है जिसके पीछे खड़ा परिवार का हर सदस्य एक दूसरे का दुश्मन होता जाता है। उस मकान में गुफाओं से ज्यादा अंधेरा रहता है।

लिली पहली बार इस अकेलेपन को अनन्त के यहां टूटते देखती है क्योंकि यहां आदमी की परतें नही हैं। वह जैसा है वैसा ही रहता है। भले ही खूंखार हो। इसीलिए लिली इस गन्दी कोठरी में आकर किसी कदर भयमुक्त हो जाती है। वह पहली बार खतरे पर विश्वास भी कर सकती है।

नाटक के प्रारंभिक दृश्यबंध में परिवर्तन कतई ज़रूरी नहीं है। बल्कि यथार्थवादी दृश्यबंध सिर्फ वहां हो सकता है जहां अनन्त और लिली के दृश्य हैं। खौफ में डूबी लिली के पिता की कोठी का इसमें कोई महत्व नहीं है। सिर्फ वहां का अंधेरा ही ज़रूरी है। इसीलिए उस कोठी के अन्दर के दृश्य केन्द्रित दीपन में ही होते हैं और पात्रों को छोड़ कर बाकी सब अंधेरे में डूबा रहता है।

यों तो लिली की मां, उसके पिता, नवल, आया, बालू आदि पात्र भी अलग से लाए जा सकते हैं लेकिन तब उनमें एक दूसरे का चेहरा झलक जाने को आतंकपूर्ण घटनाओं का प्रभाव कम हो जाएगा। पिता आया को बुलाता है और आया की जगह लिली ही आती है और दो क्षण के लिए वह उद्धत लिली रहती है फिर आया बन जाती है।

लिली के लिए पहला नजदीकी आदमी अनन्त ही है। इसीलिए वह हर भूमिका में उसमें ही परिवर्तन देख लेती है।

लिली द्वारा ही शेष सभी भूमिकाएं कराने का एक कारण यह भी है कि उसके निकट एक मात्र जीवित मादा वही है। उसी को अलग-अलग भूमिकाओं में वह भी देखता है।

इसके दो अंक सिर्फ लेखकीय सुविधा के लिए ही हैं अन्यथा इसे एक साथ बिना मध्यान्तर के खेला जा सकेगा।]

पहला अंक

पहला दृश्य

समय : रात

[अनन्त बेहोश लिली को कंधे पर लादे हुए एक हाथ में स्कूली बस्ता लटकाए दरवाज़े से झुक कर अन्दर आता है। निर्ममता से टूटे तख्त पर पटक देता है। दरवाज़े के बाहर सावधानी से देखता है और अच्छी तरह बंद कर देता है। थोड़ा सा टटोल कर मोमबत्ती उठाता है और जलाता है]

अनन्त : (माचिस बुझाते हुए) अब लगता है दिखाई भी कम देने लगा है। (रोशनी में लिली को उलट कर चेहरा देखता है) अच्छी खासी है। खासी है। ...अच्छी खासी है...खासी है।

[थोड़ा पीछे हट आता है। लिली की मैक्सी कुछ घबरा कर घुटनों तक खींचने की कोशिश करता है फिर मोमबत्ती कहीं रखने लगता है। लिली होश में आती है और बेतरह चीखने लगती है]

लिली : बचाओ···आह···बचाओ—

[मोमबत्ती हाथ से गिर जाती है। वह झपट कर उसका मुंह दबा देता है। वह दांत काट लेती है और फिर चीखने लगती है। वह उसे थप्पड़ मार बैठता है। लिली फिर भी चीखती जाती है। वह जबर्दस्ती दुबारा मुंह बन्द करके एक चाकू निकालता है। वह जल्दी में खुलता नहीं। उसे चीखती छोड़ कर वह चाकू खोलता है। इतनी देर में वह चीखती हुई दरवाज़ा पीटने लगती है]

अनन्त : ठहर जा तो—

[चाकू लेकर आक्रमण करते उस भयानक आदमी से डर कर वह सहम जाती है और चीखना बन्द कर देती है]

अनन्त : खबरदार अगर यहां से हिली या दुबारा चिल्लाई! तेरी बोटियां काटकर रख दूंगा—खबरदार यों ही खड़ी रह!

[उसे चाकू से धमकाता हुआ लगभग कांपता, दरवाज़ा खोलकर बाहर देखता है और दुबारा दरवाज़ा बन्द करता है]

लिली : नहीं-नहीं, अब नहीं···अब नहीं चीखूंगी···मुझे मत मारो···मुझे मत मारो!

अनन्त : मुझे अच्छी तरह पता है, छोकरो, तू मानेगी नहीं। ऐसा खतरा बार-बार कौन लेगा। तेरा इन्तज़ाम

करना ही होगा।

लिली : नहीं—मुझे—नहीं—

अनन्त : इसके अलावा और कोई चारा नहीं है, छोकरी। ज़बान बाहर कर।

लिली : नहीं—

अनन्त : ज़बान निकाल। जब तक ज़बान काट नहीं दूंगा तेरा भरोसा नहीं कब चिल्ला पड़े। याद रख मैं बहुत खूंखार आदमी हूं। ज़बान निकाल—

लिली : अरे तो कह दिया न, नहीं चीखूंगी।

अनन्त : ओ हो। बैठ जा। बैठ! (लिली बैठती है) देख रहम-वहम करना नहीं जानता, समझी? अगर यहां से जरा-सा भी हिली तो समझ ले एक मिनट नहीं लगेगा मुझे। ये चाकू हलक में उतार दूंगा। साली मोमबत्ती ही पता नहीं कहां गिर गई। अंधेरे में दिखाई भी कम देता है···मिलेगी भी नहीं···तेरे पीछे खोई है···जान ले लूंगा तेरी··· खबरदार, अगर वहां से हिली!

लिली : मैं मोमबत्ती खोजूंगी न। अंधेरे में डर लगता है।

अनन्त : वहीं बैठ, मोमबत्ती की बच्ची! नहीं तो टांग तोड़ दूंगा।

लिली : मुझे पता है न कहां गिरी थी—

अनन्त : कहां गिरी थी?

लिली : उधर अपने पीछे की तरफ देखो न।

[अनन्त पीछे टटोलता है और मोमबत्ती पा जाता है]

अनन्त : बड़ी चालाक हो। ऐं ? ठीक करूंगा तुमको।

[बत्ती जलाता है]

अनन्त : तुमको दिखाई पड़ रही थी ?

लिली : (खामोश)

अनन्त : तुमको मोमबत्ती दिखाई पड़ रही थी ?

लिली : नहीं।

अनन्त : फिर कैसे मालूम हुआ कि कहां है ?

लिली : (खामोश)

अनन्त : फिर तुझे कैसे मालूम हुआ ?

लिली : मैंने गिरते देखी थी।

अनन्त : ओह ! तब ठीक है। मैं तो समझा था···मैं समझा था मेरी आंखें ज्यादा ही खराब हो गई हैं। मगर यह सोच लेना अगर तुमने ज़रा भी गड़बड़ की तो खैर नहीं है। (कुछ नोट निकाल कर गिनता है) और यह भी बता दूं यहां से भाग निकलने की कोशिश मत करना। पहले एक बार ऐसे ही एक लड़की भागी थी। दो बार पकड़ा, दोनों बार भागने लगी। उसकी आधी टांग मैंने काट दी थी। समझ गई ? (झपट कर उसकी टांग मोड़ता है। वह कराहती है) एक मिनट नहीं लगेगा।

लिली : तुम···तुम मुझे यहां क्यों लाए हो ?

अनन्त : यह जानना तुम्हारा काम नहीं है। बस, यह समझ लो यहां से निकलना आसान काम नहीं है। मैंने बता दिया। ये जो बड़ी सुन्दर-सुन्दर सी टांगें हैं न, बैसाखी लगा के भी नहीं चल पाओगी। समझ

लो। ठीक-ठाक रहोगी तो मैं कसम खा सकता हूं, तुमको कुछ नहीं होगा। वो लोग तुमको घर छोड़ आएंगे।

लिली : वो लोग ?

अनन्त : ज़्यादा बकबक करने की ज़रूरत नहीं है। वैसे मेरा तुमसे कोई खास लेना नहीं है यह समझ लो। उन्होंने कहा है इसलिए तुम्हें रख रहा हूं। कुछ खाएगी ?

लिली : (खामोश)

अनन्त : कुछ खाएगी ?

लिली : नहीं।

अनन्त : खाएगा तो तेरा बाप भी। भूख लगने दो। अभी तो मक्खन-पनीर पेट में ठुंसा होगा। उन्होंने कहा था इसलिए तुझे रख लिया है वरना यह काम जोखम का है। मैंने उन लोगों को भी कह दिया है। तेरा बाप तो काफी अमीर आदमी है न ? सुना है, वो लोग कह रहे थे, तेरा बाप बहुत अमीर है। तेरे बदले पचास हजार रुपया तो दे ही देगा। पचास हजार! बाप रे ! कितने होते हैं···सौ···दस बार सौ, तब हजार फिर और दस-बार सौ, फिर और दस बार···सौ साला! गिनना भी मुश्किल है। मगर तेरा बाप···सुन तेरा बाप तो बड़ी आसानी से गिन लेता होगा ? क्यों ? (लिली खामोश) एक बात बता···इतना रुपया दे देगा तेरा बाप ? दे तो देगा ही। तेरे लिए जरूर देगा। क्यों ?

लिली : (हंसती है)

अनन्त : क्या मतलब ?
लिली : (हंसी)
अनन्त : चोप। (लिली चुप होती है) क्यों हंस रही थी ?
लिली : पापा एक पैसा नहीं देंगे।
अनन्त : क्या मतलब ?
लिली : पापा एक पैसा नहीं देंगे।
अनन्त : अरी देगा कैसे नहीं ! मालूम है वो लोग क्या हैं ? बड़े-बड़े रो देते हैं। रुपये कैसे नहीं देगा। और देगा नहीं तो तू क्या उसको मिल जाएगी ?
लिली : एक पैसा नहीं देंगे। देख लेना।
अनन्त : तेरी लाश मिलेगी उसको, वो भी टुकड़े-टुकड़े।
लिली : (डर कर) नहीं देंगे। देख लेना। मैंने कह जो दिया।
अनन्त : (नज़दीक आकर चाकू दिखाते हुए) तू सच कह रही है ?
लिली : मैं क्यों झूठ बोलूंगी। तुम खुद देख लेना।
अनन्त : मगर क्यों नहीं देगा ? उसके पास लाखों रुपया नहीं है ?
लिली : कोर्स।
अनन्त : क्या ?
लिली : करोड़ों।
अनन्त : फिर क्यों नहीं देगा ?
लिली : नहीं देंगे। मैं जानती हूं।
अनन्त : नहीं देगा ? रुपये नहीं देगा ? तुझे छुड़ाने के लिए रुपये नहीं देगा ? हद हो गई। लाख रुपया

है। करोड़ों है। पचास हजार नहीं देगा। तमाशा तो देखो। बेटी के लिए नहीं निकलेगा टेंट से। देख लो तमाशा ! साला, लाखों करोड़ों रुपया है···
लिली : तुम देख लेना, उसमें क्या है।
अनन्त : चोप ! तेरे लिए पचास हजार नहीं देगा ? चालीस हजार देगा···तीस हजार देगा···बीस हजार भी नहीं देगा ?
लिली : (हंसी)
अनन्त : चोप ! नहीं देगा। क्या करेगा ? कहेगा लौंडिया यों ही दे जाओ ! और तुझे मखमल में लपेट के उसके पास दे आएंगे, क्यों ? तुझे पता नहीं है··· पहले तो चिट्ठी जाएगी, जवाब नहीं आएगा तो तेरी उंगली काटकर उसके पास भेज देंगे। फिर भी नहीं माना तो तेरा एक हाथ काट कर भेजेंगे। समझ गई ? और फिर भी नहीं माना तो तेरा अचार नहीं डालना है। सिर काट के बोरी में भर के कहीं फेंक आएंगे। कहीं क्या तेरे बंगले के दरवाजे पर ही फेंक आएंगे (लिली रोने लगती है) ···पचास हजार रुपया नहीं देगा। ये भी साला मजाक है। लाखों रुपया है, करोड़ों है। मजाक है साला। देखो तो! हत्तेरे की ! ···सो जा अब। मर ···(ताला बन्द करता है। लिली रोती है) अब सो जा न। पचास हज़ार नहीं देगा वह। बाप है···सो जा न ! यहां ऊपर सोएगी? ···चल··· सो। अरे सो जा यहां आकर।(जबर्दस्ती तख्त पर

डाल देता है) नीचे चींटे-चींटियां खा जाएंगे तुझे। (नीचे खुद सोता है। फिर उठकर बैठ जाता है) सोई नहीं ?···अच्छा सुन तू पक्का जानती है तेरा बाप रुपया नहीं देगा ? (रोते-रोते इनकार) हत्तेरे की ! (खामोशी) अब तो मुझे तेरे ऊपर रहम आने लगा है···

लिली : तो-तो तुम मुझे घर क्यों नहीं जाने देते ?

अनन्त : अरी वाह। तू बहुत चालाक है। देखना पड़ेगा न तू सच कह रही है या नहीं।

लिली : और अगर मेरी बात सच निकली तो छोड़ दोगे ?

अनन्त : (खामोश)

लिली : सच निकली तो जाने दोगे ?

अनन्त : चोप! सो जा अब चुपचाप और मुझे भी सोने दे। (खामोश) नहीं देगा रुपये तो भी तुझे कैसे छोड़ देंगे ? पुलिस मुझे छोड़ देगी ? उन लोगों को छोड़ देगी ? तुझे उड़ा कर लाए हैं इसके लिए नहीं धरेगी ? और फिर कौन कहेगा, कौन मानेगा कि मैंने तुझे बन्द करके रखा तो तुझे खराब नहीं किया। उसका मुकदमा अलग से चलेगा तू भी तो उन्हीं लोगों में से है न—मुकदमा चलेगा ···जज पूछेगा—मिस साहब इस गुंडे को पहचानती हो ? तू कहेगी—हां पहचानती हूं। जज पूछेगा—इसने तुम्हारे साथ खराब काम किया ? बस—टीं टीं करके रोएगी और कहेगी—हां किया। कैसे किया ?···बटर बटर बोलेगी जो नहीं हुआ

वो भी बोलेगी—इसने मेरे कपड़े फाड़ दिए, फिर जमीन पर पटक दिया, फिर मेरा मुंह दबा लिया, फिर मेरे ऊपर आ गया···हात्तेरे की—झूठों की औलाद साली। पचास हजार नहीं देगा। लाखों रुपया है। करोड़ों है। पचास हजार नहीं देगा। क्यों ? मर !···अरे सोती क्यों नहीं ?···क्या नाम है तेरा ?

लिली : लिली।

अनन्त : (हंसी) कैसा नाम है, लिल्ली ! लिल्ली—मजेदार नाम है। तुम लोग ऐसे ही अजीब-अजीब नाम रखते हो।···लिल्ली ···क्या मजेदार नाम है। सो जा अब। आराम से सो जा। साले उन लोगों ने झंझट में फंसा दिया नहीं तो मुझे क्या करना था।

लिली : तुम मेरे सोने वाले कपड़े नहीं ला सकते ?

अनन्त : क्या ?

लिली : मेरे कपड़े।···आखिर ये सब पहने पहने कैसे सो सकती हूं ?

अनन्त : सो जा। आदत पड़ जाएगी। (खामोशी) ये टांगें क्यों नहीं ढकसकती है ऐं ?—क्या नाम है लिल्ली। कहां से पकड़ा था तुझे ?

लिली : स्कूल के बाहर।

अनन्त : कौन-सा स्कूल ?

लिली : डान्सिग स्कूल।

अनन्त : ये कौन-सा स्कूल है ?

लिली : जहां हम लोग डान्स सीखने जाते हैं।

अनन्त : मतलब नाचना। तू नाचना सीखने जाती है ?

लिली : हां।

अनन्त : घुंघरू बांध कर नाचती है ?

लिली : फिर क्या ?

अनन्त : और सुनो। साला लाखों रुपया है, करोड़ों और पचास हजार नहीं देगा। तेरे बाप को ही नचाऊंगा। देख लेना !

लिली : (हंसी)

अनन्त : चोप। तुझे नाचना आता है ?

लिली : हां।

अनन्त : घुंघरू तेरे पास हैं ?

लिली : हां। मेरा बैग– मेरा बैग ?

अनन्त : वो पड़ा है तख्त के नीचे।

लिली : ओह। मैं समझी तुम लोगों ने फेंक दिया।

अनन्त : इसमें घुंघरू हैं ?

लिली : हां।

अनन्त : चल उठ।

लिली : क्यों ?

अनन्त : नाच। (खामोशी) मैं कह रहा हूं नाच !···सुना नहीं ?

[लिली घुंघरू बांधती है और उसकी तरफ़ देखती जाती है। किसी कदर उत्तेजक दृष्टि]

अनन्त : बंध गए कि नहीं ?

लिली : हां।

अनन्त : बस कर। मैं कह रहा हूं बस कर। अरे-अरे इन्हें

उतार दे—मैं कह रहा हूं उतार दे—

[उसे पीटने लगता है। पीटते-पीटते वह अपने हाथों को जहां-तहां पटकता है जैसे अपने को दंड दे रहा हो। लिली रुक जाती है।]

अनन्त : सो जा अब। (नीचे से कम्बल उठाता है। ताला खोलता है) अगर भागने का चक्कर हो तो भूल जा, समझी ? मैं बाहर से ताला लगा रहा हूं। मेरी नींद भी कुत्ते की नींद है—

लिली : तुम कहां जा रहे हो ?

अनन्त : बाहर सोने।

लिली : मगर क्यों ?

अनन्त : क्यों का क्या मतलब ?

लिली : मतलब है···मतलब है···मैं···(सहसा एक अव्यक्त चमक उसकी आंखों में आकर बुझ जाती है) मुझे डर लगेगा न।

अनन्त : तो मैं चौकीदारी करूंगा तेरी ?

लिली : मैं सच कह रही हूं मुझे डर लगता है···

अनन्त : किस बात का डर ? कोई तेरा गला घोंट देगा ? तेरी···तेरी इज़्ज़त ले लेगा ?

लिली : तो तुम्हें ही किस बात का डर है ?

अनन्त : डर ? मुझे ? मुझे डर है ?

लिली : फिर किस लिए तुम बाहर सो रहे हो ?

अनन्त : किस लिए मतलब ?

लिली : मतलब (यकायक उसके आर-पार देखती हुई

बोलने लगती है) मतलब तुम समझ रहे हो। मैं तो समझती ही हूं। इससे ज्यादा और कुछ कहना ज़रूरी है क्या ?

[उसके यह बोलते-बोलते अनन्त उसके नज़दीक आ जाता है)

अनन्त : तू जानती है तू क्या कह रही है लड़की ?

लिली : (अपने आपको एक डरी हुई लड़की में बदल कर) नहीं-नहीं, मैं कुछ नहीं कह रही थी। मैं···

अनन्त : बहुत बड़-बड़ करने की ज़रूरत नहीं है। सो जा चुपचाप।

लिली : (उसकी तरफ झपटते हुए) नहीं। तुम बाहर नहीं सोओगे। नहीं···तुम···

अनन्त : अरे हट। (उसे धकेलता है)

लिली : नहीं···मुझे यहां डर लगेगा···नहीं···(वह दरवाज़ा बाहर से बन्द करता है)···नहीं···बन्द मत करो।

अनन्त : (बाहर से ही) एक बात बता दूं लिल्ली की बच्ची, अगर ज्यादा चिल्लाई तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा।

लिली : मगर···मगर मुझे डर लग रहा है···मुझे···दरवाजा खोलो···मुझे डर लग रहा है···मुझे···मुझे··· (दरवाजा भड़-भड़ाकर हार जाती है। घबराकर उस गन्दे मकान का डरावना परिवेश देखती है) मैं कह रही हूं दरवाज़ा खोल दो। मुझे यहां डर लग रहा है। सुना नहीं ? दरवाज़ा खोल दो। मुझे

यहां डर लग रहा है।···मैं कह रही हूं···

[वह सुनता नहीं। दरवाज़ा बन्द कर लेता है। अब लिली का वह भय गायब हो जाता है]

लिली : सुना नहीं ? मुझे डर लग रहा है !

[यह कहते वक्त एक मुस्कुराहट चेहरे पर आ जाती है। अब वह इस तरह चीखती है जैसे उस जगह उसे मज़ा भी आ रहा हो। वही कहती और खुश होती हुई वह कम्बल लेकर बड़े आराम से लेट जाती है, गोया वह वहां पहली बार बेहद सुरक्षित महसूस कर रही हो। अंधेरा।]

दूसरा दृश्य

समय : काफी सुबह। बांस की खिड़की से लाल-पीला आसमान।

[लिली तख्त पर सोई हुई। खिड़की में सहसा एक भयानक हाथ दिखता है फिर चेहरा। चेहरा अनन्त का है। वह और खौफनाक दिखने लगा है। चेहरा वहां से हट जाता है। दरवाज़े का ताला खुलता है। बोतल लिए हुए अनन्त अन्दर आता है।

लिली को देखता है लालच भरी निगाहों से। बोतल रखता है। उसकी तरफ हाथ बढ़ाता है। वापस लौटकर फिर पीता है। इस बार ज्यादा निश्चय से उसकी तरफ जाता है और झटके से घूम कर हटआता है]

अनन्त : (विकृत हंसी) मैं कहता हूं जज साहब, ये आदमी पैदायशी जरायमपेशा है···इसने···इसने इस नन्हीं बच्ची को जबर्दस्ती उड़ाया और गैरकानूनी तरीके से अपनी कोठरी में कैद कर दिया।

लिली : (सोई हुई दिखती है, नेपथ्य से उसकी आवाज़) योर आनर ! ही इज़ द मैन, यही वो आदमी है। इसने···इसने मुझे···मेरे साथ एक ब्रूट की तरह ज़बर्दस्ती की—हां मैं बेबस हो गई थी आप देख रहे हैं यह कितना ताकतवर है और कितना भयानक है। इसने मेरे हाथ जकड़ लिए—इसने मेरे कपड़े फाड़ डाले, योर आनर फिर इसने मुझे जबर्दस्ती जमीन पर गिरा दिया और इसके बाद—और इसके बाद—योर आनर—इसने शराब पी रखी थी—इसने—

अनन्त : (बुरी तरह चीख कर) झूठ मत बोल, भगवान के लिए झूठ मत बोल। मैंने शराब पी है लेकिन हाथ नहीं लगाया है तुझे—

लिली : (आवाज़) योर आनर, आप यकीन करेंगे···इसकी शकल देखकर ही क्या यकीन कर पाएंगे ?

अनन्त : शकल—क्या है मेरी शकल में ? क्या है तेरे बाप की शकल में ? क्या है जो मुझमें खराब है···एं···

लिली : (आवाज़) इसके ये बढ़े हुए बाल···

अनन्त : बाल ? तेरा बाप रोज दाढ़ी बनाता है यही न ? एक··· खाली एक उस्तरा न हो तो आदमी खराब हो जाता है···खाली एक उस्तरा न होने से···

लिली : (आवाज़) इसके बढ़े हुए नाखून···इसका गंदा शरीर··· इसके बदबूदार कपड़े···मैं पहचान सकती हूं, माई लार्ड···

अनन्त : मेरे नाखून···गंदा बदन···बदबूदार कपड़े···ये पहचान है···अरे झूठों की औलाद, खाली इनसे तू आदमी पहचान लेती है ? और बदबू ··अरे हां···ऐ तुझे कैसे मालूम हुआ मेरे कपड़ों से बदबू आती है ? कैसे मालूम हुआ ? (सोई लिली को झकझोरता है और सवाल करता जाता है)

लिली : जब तुम यहां कंधे पर लादकर ला रहे थे उस वक्त।

अनन्त : उस वक्त ? तो तू होश में थी ? तू बेहोश नहीं थी ?

लिली : मैं डर गई थी लेकिन बेहोश नहीं थी···और फिर मुझे लग रहा था···

अनन्त : क्या लग रहा था ?

लिली : मैं सोच रही थी···तुम दरअसल चोर हो न, मैं सोच रही थी···

अनन्त : क्या ? चोर ?

लिली : हां।

अनन्त : ये तुझे किसने कहा ? (लिली खामोश) किसने कहा मैं चोर हूं ?

लिली : किसी ने नहीं।

अनन्त : किसी ने नहीं ? फिर तूने मुझे चोर क्यों समझा ?

लिली : वो तो— वो तो···लेकिन क्या तुम चोर नहीं हो ?

अनन्त : आखिर कहा किसने ? कैसे सोचा मैं चोर हूं ?

लिली : किसी ने नहीं।

अनन्त : फिर ? मैं चोर लगता हूं ?

लिली : हां।

अनन्त : क्या ? अरे···अरे तेरा दिमाग खराब हुआ है ? मैं चोरा लगता हूं ? (लिली खामोश) मैं चोर लगता हूं ? किस बात से चोर लगता हूं ? किसकी चोरी की ? तेरे यहां कुछ चुराया ?

लिली : नहीं। एक बार मेरे यहां एक चोर आया था।

अनन्त : चोर आया था ? वो मैं था ?

लिली : नहीं। आया था। उसे रुल्टू ने पकड़ा था।

अनन्त : रुल्टू कौन ?

लिली : हमारा ड्राइवर। बहुत मोटा है रुल्टू। बड़ा मज़ा आय था। चोर को गिराकर रुल्टू उस पर बैठ गया। चोर गों-गों करने लगा था।

अनन्त : वो मेरे जैसा था ? चोर मेरे जैसा था ?

लिली : (लिली उसे देखती है, कुछ गंभीर हो जाती है) नहीं··· वो···वो···तो रुल्टू ने न उसको बहुत पीटा था। बाद में जब पापा की बेंत टूट गई न तो मेरी मम्मी ने रुल्टू को अंकल की बेंत दी। वो बेंत बहुत मज़बूत है। गैंडे की खाल से बनी है। टूटती नहीं है। अंकल रोडीशिया से लाए थे। रोडीशिया जानते हो— वहां जंगली लोग रहते

हैं···

अनन्त : वो चोर मेरे जैसा था ?

लिली : हां···नहीं।

अनन्त : फिर ?

लिली : तो वो बेंत ना···अगर उस बेंत से किसी को मारो तो ऊपर से तो नीला निशान पड़ जाता है लेकिन अंदर से मांस फट जाता है। आदमी बस चुपचाप मर जाता है।

अनन्त : मर जाता है···वो बेंत···वो मेरा जैसा था···

लिली : हां···नहीं···नहीं। उसको न रुल्टू ने बहुत पीटा था और फिर गाड़ी पर लादकर पुल के पास छोड़ आया था···

अनन्त : पुल के पास···

लिली : हां···न्यू ब्रिज है किंग्जवेकैंप का···गाड़ी पर लादकर ले गया रुल्टू। अपने आप तो वह चल भी नहीं सकता था। बेहोश हो गया था न !

अनन्त : पुल के पास छोड़ा था ? ठीक जानती है तू ? नये पुल के पास ?

लिली : हां। रुल्टू ने बताया था वहां वो कीचड़ में उसे लिटा आया था। कह रहा था कीचड़ में बड़े-बड़े क्रैब्स होते हैं···

अनन्त : क्या होते हैं ?

लिली : क्रैब्स। केकड़े। रुल्टू कह रहा था उसे केकड़े खा जाएंगे। खा भी गए होंगे।

अनन्त : केकड़े···केकड़े···तुझे पता है आदमी को केकड़े खाने

लगें तो कैसा लगेगा ?

लिली : उफ । हारिबल···

अनन्त : उस बेंत से मारने पर नीले निशान पड़ते हैं ?

लिली : हां ।

अनन्त : फिर वे सूज जाते हैं ।

लिली : हां ।

अनन्त : फिर उनमें मवाद पड़ जाता है ।

लिली : हां, पस ।

अनन्त : फिर आदमी तड़पता रहता है और मर जाता है···

लिली : हां ।

अनन्त : उसे रुल्टू ने किंग्जवेकैंप के नये पुल के पास कीचड़ में छोड़ दिया था न···

लिली : हां ।

अनन्त : उसकी शकल मुझसे मिलती-जुलती थी ?

लिली : नहीं-नहीं···वो तो···

अनन्त : झूठ मत बोल ! झूठ मत बोल ! उसकी शकल मेरी जैसी थी···ऐसी ही थी···

लिली : नहीं···

अनन्त : मेरी जैसी थी । मेरी जैसी थी क्योंकि···क्योंकि वो मेरा भाई था । वो मेरा भाई था । बिल्कुल मेरी ही शकल का । उसको कीचड़ में केकड़े खा रहे थे । उसके नीले निशान एक हफ्ता सड़ते रहे थे और फिर वह चुपचाप मर गया था । वो मेरा भाई था । बोल मुझसे मिलती-जुलती थी न उसकी शकल ?

लिली : वो···

अनन्त : सच बोल···

लिली : हां !

अनन्त : हां । मुझसे मिलती-जुलती शकल थी । उसे तुम लोगों ने मारा था···मुझे आज तक नहीं पता था । आज पता लगा, तुम लोगों ने मारा था उसे । ओफ़ याद रख··· याद रख तुझे उससे ज़्यादा भयानक मौत मारूंगा । उससे ज़्यादा खौफनाक मौत । वो एक हफ्ते में मरा था तू एक महीना तड़पेगी । ठीक है···मुझे शायद दया आने लगी थी तेरे ऊपर । तुझे मालूम है वह क्यों गया था वहां ?

लिली : चोरी करने ।

अनन्त : अरे बस कर झूठों की औलाद । बस कर । मालूम है तुझे वो वहां क्यों गया था ? (लिली चुपचाप घूरती है) बताऊं क्यों गया था ? तेरी मां की आग बुझाने । पता है ? पूरे एक महीने से जा रहा था वहां । हुंह । साला । हवा में उड़ने लगा था । रोज किस्से सुनाता था । फल-मिठाई खाकर आता था । केसरिया खीर खाता था साला । तभी केकड़ों ने इतनी आसानी से उसे खाया । तेरी मां बुलाती थी उसको, अपनी हविस पूरी करने के लिए तेरी मां बुलाती थी । और जब रुल्टू ने उसे देख लिया वो चोर हो गया । वो चोर था न···

लिली : नहीं···

अनन्त : वो चोर था । बोल न वो चोर था । बोल !

लिली : मुझे भूख लगी है ।

अनन्त : क्या ?

लिली : मुझे भूख लगी है ।

अनन्त : भूख लगी है ?···तुझे भूख लगी है ? दिखाता हूं तुझे कैसी होती है भूख । चोर जैसा लगता हूं ! मैं जा रहा हूं । देखता हूं आज सारे दिन तू भूखी रहती है तो क्या होगा । मैं चोर जैसा दिखता हूं । साला रोज़ किस्से सुनाता था···मेम साहब बड़ी खूबसूरत है···मेम साहब की छातियां गुलाबी हैं···मेम साहब की जांघ पर नीला दाग है···साला···नीला दाग···एक हफ्ता सड़ता रहा फिर मर गया न···साला···

[दरवाज़ा खोलता है और बाहर निकलता है]

लिली : मगर मुझे···(वह बंद करने लगता है) मैं कह रही हूं ठहर जाओ ! (वह अचकचाकर रुक जाता है) तुमने सुना नहीं···(आवाज़ में एक ज़हरीली चुभन भरा रहस्य) मुझे भूख लगी है। (अनन्त अजीब नजर से कुछ पहचानने की कोशिश करता हुआ उसे घूरता है)

अनन्त : छड़ी···गैंड़े की खाल की छड़ी···नीले-नीले निशान पड़ जाते हैं और अंदर ही अंदर सड़ना होता है···

लिली : तुमने सुना नहीं, मुझे भूख लगी है !

अनन्त : (झटके से पीछे हटते हुए) मर ! साला···हद हो गई ।

[तेज़ी से दरवाज़ा बंद कर लेता है । लिली थोड़ी देर दरवाज़ा बंद होते देखती है फिर जैसे उसमें विस्फोट हो जाता है। चीज़ें पटकती हुई चीखती है]

लिली : बचाओ···बचाओ···

[दरवाज़ा झटके से खुलता है । लगभग

विक्षिप्त अनन्त हाथ में खुला चाकू लिए अंदर आता है । लिली का चीखना रुक जाता है । वह चाकू सामने किए उसकी तरफ़ बढ़ता है । लिली चाकू देखती हुई पीछे हटती जाती है]

लिली : (कंठ में फंसी आवाज़, पीछे हटते हुए) मुझे भूख लगी है···मुझे भूख लगी है···मुझे···

[यकायक एक जगह वह ठहर जाती है। उसकी आंखें चाकू पर टिकी हुई तरल हो आती हैं जैसे उनमें एक कामना समा गई हो । उसका डर जैसे किसी निमंत्रण में बदल जाता है। वह अपने दोनों हाथ जैसे हथियार डालने के लिए उठाती है लेकिन उनका उठना एक कामना-भरी चुनौती में बदल जाता है। चाकू लिए हुए अनन्त भी ठहर जाता है]

लिली : (भर्राई आवाज़) छड़ी···गैंडे की खाल की छड़ी···नीले-नीले निशान पड़ जाते हैं और अंदर ही अंदर सड़ते जाते हैं···

अनन्त : मर ! मर जा !

[वह झटके से दरवाज़े के बाहर निकल जाता है । लिली के चेहरे पर अब एक तकलीफ उभर आती है । वह दरवाज़ा बंद कर लेता है । लिली हताश और पीड़ित हो उठती है]

लिली : मुझे···मुझे भूख लगी है···मुझे भूख लगी है···

[उसकी आवाज़ में टूटन है और एक तरह की बेचैनी भी। धीरे-धीरे अंधेरा हो जाता है]

तीसरा दृश्य

स्थान : वही

[लिली सोई हुई। बाहर आवाज़ें सुनाई देती हैं]

अनन्त : (नेपथ्य से) अबे गूंगे, तुझे भेजा है ? ('गों-गों' की आवाज़) वो लोग क्यों नहीं आए ? इस लौंडिया का अब मैं क्या करूं ? मुझे तो अच्छा फंसा दिया। हां, हां। लौंडिया अंदर है।

[लिली चौंक उठती है। बातें सुनती है]

वो लौंडिया भी ठीक ही कह रही थी। बाप ने कानी कौड़ी नहीं दी। साला···लाखों रुपया है··· करोड़ों हैं···पचास हजार रुपया नहीं निकला साला··· मुसीबत तो अपनी खड़ी कर दी न। पुलिस साली सूंघती हुई न आ जाए तो कहो। मगर सुन, लौंडिया को मेरी कोठरी में नहीं मारना है। कहीं बाहर ले जाकर मार दे। उन लोगों ने क्या कहा था ? ('गों-गों की आवाज़) ठीक कहा। साला लौंडिया है खूबसूरत, मगर क्या कर सकते हैं ! बाहर ले जा के मारेगा न उसे ?

ये वाली भी बड़ा चालाक है, कतल के लिए गूंगे को भेजता है। पुलिस पकड़ भी ले तो कुछ उगले नहीं। ताला खोल दूं ? लौंडिया भीतर है। ताला मार गया था। भरोसा नहीं है। है तो छोटी मगर बड़ी तेज़ है। क्या ? मुझे दर्द—उस लौंडिया का ? साला···

[लिली यकायक छटपटा कर उठती है। वह दरवाज़ा अंदर से बंद करती है। बाहर संवाद जारी]

अनन्त : इस सांप की बच्ची के लिए दर्द ! उसके बाप को दर्द नहीं है मुझे होगा···साला ! ला, सिगरेट दे·· गैंडे की खाल के बेंत से मारा था मेरे भाई को···नीले-नीले निशान सड़ते रहे और वो मर गया···साला मुझे···

[ताला खुलने की आवाज़]

अनन्त : ठीक से ले जाना बे गूंगे। उधर नाले में ले जाके मारना। वहीं पानी में बहा देना···अरे, अंदर से बंद है···

[दरवाज़ा पीटता है। लिली की घबराहट बढ़ती है]

अनन्त : दरवाज़ा खोल···

[बार-बार चीखता है। दरवाज़ा पीटता है। फिर दरवाज़े पर धक्के देने लगता है। लिली छटपटाहट में दरवाज़े पर भारी तख्त बड़ी मुश्किल से खिसकाकर अड़ा देती है। भारी-भारी और चीज़ें भी दरवाज़े पर अड़ाती है। दरवाज़ा पीटने की आवाज़

बढ़ती जाती है और फिर यकायक दरवाज़ा टूटने की आवाज़। लिली चीखकर घुटनों में सिर दे लेती है। सन्नाटा। सिर उठाती है। कहीं कुछ नहीं। कोई आवाज़ें भी नहीं। वह उठकर चारों ओर भयभीत देखती है। कहीं कुछ गिरता है। वह चौंकती है फिर आश्वस्त हो जाती है।

तभी वह देखती है·· छोटी बाँस की खिड़की पर एक रोएदार हाथ और फिर एक चेहरा। लिली चीख पड़ती है]

अनन्त : दरवाज़ा खोल ? दरवाज़ा अंदर से क्यों बंद कर रखा है ?

लिली : नहीं···

अनन्त : अरे, दरवाज़ा क्यों बंद कर रखा है ? खोल न !

लिली : नहीं···

अनन्त : अरे, नहीं-नहीं क्या हो रहा है ? खोल दरवाज़ा !

लिली : नहीं··· (रो पड़ती है)

अनन्त : दरवाज़ा खोल रही है या नहीं···

लिली : मुझे छोड़ दो प्लीज़···मुझे···मुझे मत मारो···मैं···मैं···

अनन्त : अरे दरवाज़ा तो खोल। क्या मज़ाक है !

[वह खिड़की पर से हट जाता है। दरवाज़े पर दस्तक]

लिली : नहीं···

[वह रोती रहती है। दरवाज़ा नहीं खोलती। हारकर वह दुबारा खिड़की पर आता है]

अनन्त : अरे तेरा दिमाग खराब हो गया है ? दरवाज़ा क्यों नहीं खोल रही है ?

लिली : (हाथ जोड़कर रोती हुई) मुझे···मुझे···

अनन्त : अरे तो दरवाज़ा क्यों नहीं खोल देती ? आंय ? साला हद हो गई।···दरवाज़ा नहीं खोलना है ?

लिली : नहीं।

अनन्त : ऐसे ही मरेगी···बंद होकर···भूखों ! मर जा। मैं खाना लाया था न···तेरे पेट में आग लगी थी···दरवाज़ा क्यों नहीं खोल रही आखिर ? क्या हो गया है ? एं ? अरे खोल दे न दरवाज़ा···खाना लिए-लिए गला फाड़ रहा हूं···

[अविश्वास से देखती हुई बड़ी मुश्किल से उठती है। दरवाज़ा खोलती है और तख्त थोड़ा-सा खिसकाती है और जैसे-जैसे वह अंदर आता है वह पीछे हटती हुई दीवार से लग जाती है]

अनन्त : साला! हद ही हो गई ! दो अंगुल की लौंडिया और जोर तो देखो—पूरा तखत ही खिसका दिया। क्या हो रहा था यहां, ऐं ?

[खाना तख्त पर रख कर उसके बाल पकड़ लेता है]

लिली : मैं···मैं डर गई थी।

अनन्त : डर गई थी की बच्ची ! डरेगी तो अब···साला···लाख

रुपया है, करोड़ों हैं, और पचास हजार नहीं देगा··· डरेगी तो अब···ले खाले···दाल है और रोटियां हैं। पानी अभी लाता हूं। साला···इसको भी चाकरी करनी पड़ेगी। चल, अब खा ले !

लिली : पापा से···पापा से बात की थी तुमने ?

अनन्त : खाना खा ले पहले। चल, खा···

लिली : तुमने बात की थी न···?

अनन्त : चुप कर। खाना खा ले पहले।

लिली : इसका मतलब है तुमने बात की थी।

अनन्त : मैं कह रहा हूं न पहले खा ले···

लिली : तुमने बात की थी और पापा ने···पापा ने इनकार कर दिया है···(रोने लगती है)

अनन्त : हां, बात की थी। की थी बात। साला ! बाप है··· लाखों रुपया है। करोड़ों है···पचास हजार नहीं देगा··· कहता है कानी कौड़ी नहीं देगा···ऊपर से पुलिस पीछे लगा दी है···

लिली : तुम···तुम···मुझे पहले ही मालूम था···

अनन्त : खाना खा।

लिली : तुम···तुम अब···

अनन्त : खाना खाएगी या नहीं···

लिली : तुम···तुम अब क्या करोगे ?

अनन्त : मैं क्या करूंगा ? उसके पास तेरा हाथ या उंगली काट कर भेज दूंगा···

लिली : नहीं···मैं···मैं···पापा से एक बार—मुझे फोन करने दो···

अनन्त : फोन ? वो कहता है उसे तुमसे कोई सरोकार ही नहीं है। अच्छा हुआ हम उठा लाए। और जानती है—उसने पुलिस को तेरे उड़ाए जाने के लिए नहीं अपने धमकाए जाने के लिए रिपोर्ट की है। साला···सुन। एक बात बता तेरा बाप तेरी···तुझसे इतनी नफरत क्यों करता है ?

लिली : तुम तुम जो कहो मैं करूंगी···मेरा हाथ मत काटो···

अनन्त : हाथ नहीं उंगली···

लिली : नहीं···मत काटो···नहीं···

अनन्त : खाना खा ले···

लिली : नहीं···

अनन्त : खा ले मैं कह रहा हूं···

लिली : नहीं···मुझे भूख नहीं है—

अनन्त : तो मर। (उठता है) साला। ये काम भी मुझे ही करना होता है हर बार।

[लिली चीख उठती है। अनन्त कहीं ऊपर से एक गंड़ासा जैसा औज़ार निकालता है]

अनन्त : चोप।

[लिली छटपटाती हुई बचती है। बड़ी मुश्किल से ही हाथ आती है। तख्त के पास ले जाकर बेरहमी से उंगली काट देता है। वह तड़पती रोती रहती है। एक चीथड़ा उसकी ओर फेंकता है]

अनन्त : इसे बांध ले वरना खून बहता जाएगा तो वैसे ही मर जाएगी—(कागज़ से उंगली उठाता है) साली इतनी

नन्हीं-सी उंगली कहो खो ही जाए। ये उंगली भी अजीब घिनौनी चीज़ है। साला—एक बार तो ऐसा लगता है जैसे कटने के बाद छिपकली की पूंछ की तरह छटपटाने ही न लग जाए। अरे पट्टी बांध ले न। और खाना खा ले। बचपन में एक बार मैंने एक कुत्ते के पिल्ले की पूंछ काट दी थी। बिल्कुल वैसा ही लगता है···साला···लाखों रुपया है, करोड़ों है मगर पचास हज़ार नहीं देगा। थूह ! खाना खा ले, समझी ! मरना तो वैसे भी है फिर भूखों मरने से फायदा···साला··· थूह···

[लिली रोती हुई अपना हाथ देखती है]

अनन्त : एक बात बता—तेरा बाप तुझसे ऐसी नफरत क्यों करता है ?···अरे अब उसमें बांध ले न पट्टी ! और ये खाना खा ले—चल। (खाना नज़दीक रखता है। वह खाना सुबकते हुए लात मारकर फेंक देती है)

अनन्त : अरे चोप। मर यहीं। मर जा।···थूह !

[बाहर निकलकर दरवाज़े पर ताला लगाता है। धीरे-धीरे अंधेरा]

चौथा दृश्य

स्थान : वही

[उजाला होने पर लिली बाहर की कोई आहट सुनती है। ताला खुलने की आवाज़। दरवाज़ा धीरे-धीरे खुलता है। लिली एक दरवाज़े की आड़ में हाथ में एक लकड़ी लेकर खड़ी हो जाती है। अनन्त अंदर आता है। लिली उसकी कमर से लकड़ी लगा देती है। अनन्त घबरा जाता है]

लिली : (आवाज़ बदलकर) खबरदार। हैंड्स अप। हाथ ऊपर।

[अनन्त घबराकर हाथ उठाता है। फिर धीरे-धीरे विकृत हंसी हंसने लगता है]

अनन्त : साला। हो गई छुट्टी। छुट्टी हो गई न। यही कहता था। लौंडिया तो मिल गई ना ! साला···लाखों रुपया है—करोड़ों है···मगर कौड़ी नहीं देगा···जेल भी जेल भी भिजवाएगा न···लौंड़िया भी ले जाएगा··· कौड़ी भी नहीं देगा···जेल भी भिजवाएगा। हो गया खेल खतम। एक सिगरेट पिलाओगे साहब···हाथ—हाथ नीचे कर लूं···

लिली : नो ! खबरदार। आगे बढ़ो।···

[वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। तभी लिली दरवाज़े से निकलकर भाग पड़ती है। वह चौंककर देखता है]

अनन्त : अरे···

[सहसा वह भी भागता है। थोड़ी देर मंच खाली रहता है। थका हुआ अनन्त वापस लौटता है]

अनन्त : थूह।···ओफ। सांस भी फूलने लगी है···दिखाई भी

कम देता है और···और सांस भी फूलने लगी है। कमाल की निकली यह छोकरी···मगर···मगर मैं···मैं उन्हें—उन्हें क्या जवाब दूंगा? भाग गई···कैसे भाग गई···क्या उन लोगों को भरोसा हो जाएगा···भाड़ में जाएं। उम्र भी तो कुछ होती है। अब मुझसे नहीं होने का सब कुछ साला। कैसे खरगोश की तरह भागती चली गई···और मैं···और मैं···(सहसा चौंक कर घूमता है) कौन गूंगे तू···तू···यहां वो अरे··· बात क्या है।

[उसे ऐसा वहम होता है जैसे गूंगा और उसके साथी आ गए]

अनन्त : बाली···वो···वो···तुम यकीन नहीं करोगे और सच तो यह है कि मुझे खुद यकीन नहीं होता वो खरगोश की तरह इतनी तेज़ कैसे भागी। ···बस अचानक ही हो गया और सच तो यह है कि मेरी तो अब सांस ही फूलने लगती है···बाली···गूंगे···ये···ये···(वह पीछे हटता है) बाली मैं सच कहता हूं वो बदमाश छोकरी··· (जैसे चाकू गर्दन से लगा दिया गया हो) मैं···मैं···और फिर उसका बाप पैसे भी तो नहीं दे रहा था···(जैसे चाकू हटाकर कई लोग घेर रहे हों) नहीं···बाली··· मैंने···मेरी बात तो···

[सहसा जैसे चांटा पड़ता है। हाथ गाल पर तभी पेट में घूंसा और एक बारगी ही मुंह पर घुटना। अब वह बुरी तरह पिटता रहता है। धीरे-धीरे गिर जाता है। फिर

दोनों हथेलियों के सहारे उठता है]

अनन्त : मैं सच कह रहा हूं वो भाग गई। तुम-तुम लोग···

[अचानक वह देखता है लिली सामने खड़ी है उसके कपड़े बुरी तरह मैले हो गए हैं]

अनन्त : (झपटकर उठते हुए) अरे तू भागी क्यों? क्यों भागी थी? एं? (झकझोरता है)

लिली : (झटककर अपने को छुड़ाते हुए) मुझे बचा लो।

अनन्त : मगर भागी क्यों थी?

लिली : (और अंदर सरकते हुए) वो···वो लोग आ रहे हैं। मुझे बचा लो।

अनन्त : वो? वो कौन?

लिली : तुम्हारे साथी। मैं···जो कहोगे करूंगी···प्लीज़···

अनन्त : क्या मतलब?

लिली : प्लीज़।

अनन्त : मगर बात क्या है?

लिली : मुझे बचा लो प्लीज़···मुझसे मुझसे कुछ भी ले लो··· प्लीज़···दे विल किल मी···वो लोग मार डालेंगे मुझे···

अनन्त : हैं कहां? तुझे कहां मिले?

लिली : (सहसा विक्षिप्त-सी होकर) बट—बट दे विल किल मी···दे विल···आर कमिंग···वो आ रहे हैं···दे विल किल मी···दे विल···

अनन्त : ठीक है, साला झंझट मिटेगा। भाग गई थी न···और भाग! भागकर बचा ली न जान···

लिली : दे विल किल मी···

अनन्त : (दरवाज़ा अच्छी तरह बंद करते हुए) और भाग···

लिली : नहीं···बंद मत करो···प्लीज़···मुझे यहां से निकाल ले चलो···

अनन्त : और भाग । आ गया न मजा···

लिली : सुनो, तुम जो चाहो ले लो···मुझे बचालो···

अनन्त : हत्तेरे की साला···जो कुछ चाहो ले लो···लाखों रुपया है···करोड़ों है मगर बाप साला पचास हजार नहीं देगा ···क्या ले लूं, ऐं ? क्या ले लूं ?

लिली : यू···यू···यू कैन···यू कैन स्लीप विद मी···

अनन्त : क्या ?

लिली : (उत्तेजित स्वर में) तुम···तुम मेरे साथ सोना चाहते थे न···मैं तैयार हूं···मगर मुझे···

अनन्त : (चांटा मारकर) फिर बोल···(लगातार पीटता है) फिर बोल···बोल···किसने कहा···किसने कहा तुझसे कि मैं तेरे साथ ···बोल···किसने कहा···

लिली : (पैर पकड़ते हुए रोती हुई) मुझे बचा लो प्लीज़···

अनन्त : तुझे यह कहा किसने कि मैं···बोल···

लिली : वो लोग मुझे मार डालेंगे···प्लीज़···

अनन्त : हरसाला ! (झटककर अलग होता है)

लिली : (घुटनों पर सिर रखकर) दे विल किल मी···दे विल···

अनन्त : अरे हद हो गई···कहां मिले थे तुझे वो लोग ? कहां मिले थे वो लोग ?

लिली : (क्षोभ से) क्यों पूछ रहे हो अब ?

अनन्त : अरे ? मैं पूछ रहा हूं कहां मिल गए वो लोग···

लिली : मुझे जान से मारना चाहते हो फिर पूछ क्यों रहे हो ?

अनन्त : मारना चाहते हैं । और नहीं तो क्या करेंगे तेरा ?

लिली : (लंबी खामोशी के बाद) मैं यहां से भागी···तुम भी शायद पीछे-पीछे दौड़े थे···

अनन्त : कितनी तेज दौड़ती है तू···बाप रे···

लिली : मुझे कुछ पता नहीं था किधर भाग रही हूं तभी मैंने देखा कुछ लोग आ रहे हैं मैंने उन्हें आवाज़ दी···बचाओ बचाओ···। तभी उनमें से एक चिल्लाया···अरे ये तो वही छोकरी है । ये कैसे छूट गई ? वो लोग शायद पांच-छह थे···

अनन्त : तीन रहे होंगे···

लिली : नहीं पांच-छह थे या और ज्यादा ।

अनन्त : सिर्फ तीन रहे होंगे···गूंगा, बिजली और बाली···

लिली : नहीं···

अनन्त : डरने की वजह से तुम्हें बहुत लगे होंगे ।

लिली : उन्होंने मुझे देख लिया । वो लोग समझ गए थे कि मैं निकलकर भाग रही हूं···

अनन्त : तू दौड़ती कितनी तेज है । साला, अपना दम फूलने लगा था ।

लिली : डरने के बाद किसी के पांव बिल्कुल नहीं चलते और किसी के बहुत अच्छी तरह चलने लगते हैं । मेरा पीछा करते हुए वो लोग भी थकने लगे थे तब वो लोग चिल्ला-चिल्लाकर आपस में कह रहे थे कि एक मेरे बंगले की तरफ वाली सड़क पर नजर रखे दूसरा शहर जाने वाली सड़क पर । उनका खयाल था कि मैं या तो अपने घर जाऊंगी या फिर पुलिस स्टेशन । एक यह भी कह रहा था कि मैं नहीं मिली तो वह तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा ।

अनन्त : गर्दन तोड़ देगा ? गूंगा कह रहा होगा ।

लिली : गूंगा ?

अनन्त : हां, मगर गूंगा कैसे बोलेगा ? बिजली ने कहा होगा··· साला···थूह । गर्दन तोड़ देगा । मुझे फंसाने के बाद कह रहा है ।

लिली : वो इधर आएंगे न ?

अनन्त : साला ।

लिली : वो इधर आएंगे न !

अनन्त : इधर नहीं आएंगे तो और कहां जाएंगे ।

लिली : (देर तक घूरकर) तुम्हारे अंदर बिल्कुल रहम नहीं है ?

अनन्त : (खामोशी से उसे घूरता है)

लिली : तुम्हें मेरी हालत पर बिल्कुल तरस नहीं आता ?

अनन्त : आता है ।

लिली : तो तुम···तुम···

अनन्त : तुम्हें छोड़ क्यों नहीं देता ?

लिली : (खामोश घूरती है)

अनन्त : छोड़ दिया ।

लिली : (खामोश)

अनन्त : छोड़ दिया । जाओ । क्यों नहीं चली जाती ? दरवाज़ा खोल और निकल जा ।···(चीखकर) जा यहां से !

लिली : (घबराहट) नहीं ।

अनन्त : तुझे बचा लूं । मुझे कौन बचाएगा ? आयं ? मुझे कौन बचाएगा ? (थोड़ा अंतर्मुखी हो उठता है, भावुक भी) मुझे कौन बचाएगा ? मेरा भाई···(सहसा कुछ याद

आता है) जब तुम लोग मेरे भाई को मार रहे थे वह क्या कह रहा था ?

लिली : कुछ नहीं ।

अनन्त : कुछ नहीं ? मुझे मालूम था । मुझे पता था । अरे गधा था गधा···साला । मुझे मारा होता तो मैं सारा भेद खोल देता । समझी ! डूब मरते तुम लोग ।

लिली : भेद ?

अनन्त : हां । और याद रखो मैं छोड़ूंगा नहीं । भेद खोलूंगा ।

लिली : भेद तो खुल ही गया ।

अनन्त : क्या ?

लिली : और सच पूछो तो भेद उसमें था ही कब !

अनन्त : क्या मतलब ?

लिली : सब कुछ खुला हुआ था । तुम क्या समझते हो पापा को सब कुछ मालुम नहीं था ? मुझे नहीं मालूम था ?

अनन्त : मालूम था ? क्या मालूम था ? (यकायक वह लड़खड़ा जाता है)

लिली : जो कुछ भी होता था ।

अनन्त : (अवाक् हो जाता है) तुम्हें···तुम्हें वह सब मालूम है ? क्या उम्र है तुम्हारी ? क्या समझती हो तुम ?

लिली : सब कुछ ।

अनन्त : (उसे कुछ सूझता नहीं है । अपने आप पर खीजता हुआ वह उठ खड़ा होता है । बेचैनी से हाथ मलता है फिर दरवाज़े की ओर देखता है) आखिर वो लोग आ क्यों नहीं रहे हैं ? कहां रह गए ? मैं अब और नहीं ढो सकता तेरा बोझ । (थोड़ा हिंसक होकर) और बल्कि···और

बल्कि अगर थोड़ी देर वो लोग नहीं आए तो हो सकता है मैं ही तेरा गला दबा दूं···तेरा गला···तेरा···तेरा गला···

लिली : छड़ी···गैंडे की खाल की छड़ी···नीले-नीले निशान पड़ते हैं तो अंदर ही अंदर सड़ने लगते हैं···

[यकायक लिली हंसती है। अजीब रहस्यात्मक हंसी जैसे वह कोई भेद जान गई हो और उसे बुरी तरह चिढ़ाना चाहती हो। अनन्त उसे फटी आंखों, चुप होकर घूरता है और सहम जाता है]

अंधेरा

दूसरा अंक

स्थान : वही, अनन्त की कोठरी
समय : दिन

[कोठरी का दरवाज़ा खुला हुआ है। अनन्त दरवाज़े पर खड़ा बाहर देख रहा है। लिली घुटनों के बल बैठी हुई तख्त पर बस्ता फैलाए एक मैली-सी किताब पढ़ रही है। यकायक किताब पटककर सीधी बैठ जाती है। उसके होंठ भिंच जाते हैं जैसे अंदर से कुछ उमड़ रहा हो और वह उसे रोक रही है।

वह अनन्त की तरफ देखती है। अनन्त की विराट आकृति कोई ध्यान नहीं देती, सिर्फ बाहर घूरती रहती है। लिली किताब दुबारा पटकती है। अनन्त थोड़ा अस्थिर होता है, हल्के से हिलता भर है लेकिन ज्यों का त्यों खड़ा रहता है।]

लिली : आठवीं बार है। (वह कोई जवाब नहीं देता) आठवीं बार इसी एक किताब को पढ़ चुकी हूं।···बाहर क्या

है ? कोई है ?

अनन्त : नहीं ।

लिली : मैंने कहा, मैं आठवीं बार पढ़ चुकी हूं इसी किताब को ।

अनन्त : हूं ।

लिली : तुम्हारे पास यह एक ही थी ?

अनन्त : साला ! अजीब झंझट में फंसा गए ।

लिली : तुम फिर वही सोचने लगे ?

अनन्त : तुम्हें शर्म नहीं आती इस किताब को पढ़ते हुए ?

लिली : क्या मतलब ?

अनन्त : तुम्हारी मां भी ऐसी किताबें पढ़ती है ? मेरा मतलब है खुले आम ?

लिली : खुले आम ?

अनन्त : हां, खुले आम ।

लिली : तो क्या इसको छुपाकर पढ़ा जाता है ?

अनन्त : नहीं दुनिया-भर के सामने !

लिली : अरे ! तो क्या इसीलिए तुमने इसको इतना छुपाकर रखा था ? तुम इसे छुपाकर पढ़ते हो ?

अनन्त : (ठीक शब्द न पाकर) बहुत मत बोल···बहुत मत बोल···

लिली : तो क्या तुम इसे छुपाकर पढ़ते हो ?

अनन्त : लानत है साला, मैंने इसे छुआ भी नहीं है । और तू भी मत छू । मेरी बात मान जा । तू भी मत छू इसे । मेरे भाई की है यह गंदी किताब । उसी की वजह से रख छोड़ी है, नहीं तो इस जलील किताब को आग लगा देता । मेरी बात मान, तू भी मत छू इसे···

[कुछ ऐसे कहता है कि लिली किताब उठाकर तख्त के नीचे डाल देती है]

लिली : मैंने किताब फेंक दी । (वह कुछ नहीं बोलता) मैंने किताब फेंक दी···अब ?

अनन्त : (उसकी ओर लौटकर) आखिर तेरा बाप जीत गया ।

लिली : नहीं ।

अनन्त : नहीं कैसे ? एक कौड़ी नहीं दी और वो लोग सिर्फ तेरी उंगली काट पाए । तेरा सिर काटकर तेरे बंगले पर नहीं फेंक पाए ।

लिली : अब तुम काट दो मेरा सिर···

[लिली को वह घूरता है । लिली थोड़ा सहम जाती है । वह हंसता है । लगातार हंसता जाता है । उसकी हंसी किसी कदर पैशाचिक हो उठती है । लिली का चेहरा यकायक पीला पड़ जाता है । वह धीरे-धीरे पीछे हटती है । अनन्त पैशाचिक हंसी हंसता हुआ उसकी ओर खिसकता जाता है । फिर यकायक नाटकीय ढंग से ठिठक जाता है । हंसी भी साथ ही साथ बंद हो जाती है]

अनन्त : तू बार-बार कहना क्या चाहती है ? क्या समझ रही है आखिर ? तू सोचती है मैं तेरा सिर नहीं काटूंगा ? मैं छोड़ दूंगा ? मेरा कलेजा मोम का हो गया है ? मुझे कोई लगाव हो आया है तुझसे ? दो मिनट नहीं लगेंगे मुझे तेरा सिर काटते हुए । और यह भी बता दूं (बाल

पकड़ लेता है) मुझे भी गुस्सा आता है। ज़्यादा भड़काने की कोशिश मत किया कर ! मैं यह भी बता दूं···मैं यह भी समझ गया हूं कि तू क्या चाहती है। चार रोज़ में बहुत अच्छी तरह समझ गया हूं। मैं यह भी समझ रहा हूं कि तू बार-बार यह दिखाती है कि तू बारह बरस की बच्ची नहीं औरत है। मैं यह भी जानता हूं कि चाहती रही है···तू···तू···साला। हत्तेरे को।···सुन, इधर आ। नीचे उतर···मैं कह रहा हूं नीचे उतर···

[लिली की आंखों में किसी क़दर फिर हिंसा उभर आती है। उसकी आंखें चमकने लगती हैं। नीचे उतरकर वह लगभग उससे सटकर खड़ी हो जाती है, किसी औरत की तरह तनकर। अनन्त उसे गहरी आंखों घूरता है]

लिली : मैं···मैं औरत हूं। हूं औरत। इसमें कौन-सा गुनाह है कि मैं औरत हूं, मैं बच्ची नहीं हूं !

अनन्त : जानता हूं। जिस दिन तू आई थी, उसी दिन समझ गया था। मुझे मालूम हो गया था कि···मुझे पता लग गया था कि तू उस औरत से किसी तरह कम नहीं है जो गैंडे की खाल का बेंत ले आई थी और वह भी किसके लिए ? ऐं ? किसके लिए गैंडे की खाल का बेंत···टूटता नहीं है न, और पड़ता है तो ऊपर नीला निशान भर पड़ जाता है लेकिन अंदर ही अंदर आदमी सड़ने लगता है। किसके लिए लाई थी वह बेंत तेरी मां···लड़की तू, चली जा यहां से···चली जा, वरना कसम से मैं···मैं कुछ

कर बैठूंगा।

[लिली फिर जैसे पिचक जाती है, छोटी हो जाती है और तख्त पर बैठ जाती है]

लिली : मुझे प्यास लगी है।

अनन्त : पानी है नहीं सुराही में ?

लिली : खत्म हो गया।

अनन्त : (थोड़ा रुककर घूरते हुए) ले आऊंगा अभी। थोड़ी देर रोक सकती है न प्यास ?

लिली : हां। (थोड़ी खामोशी के बाद) तुम इतना चिड़चिड़ाते क्यों रहते हो ?

अनन्त : कौन मैं ? (उसे घूरता है फिर थोड़ा सहज हो जाता है) ठीक है, ठीक है। सुराही में एक बूंद भी पानी नहीं है ?

लिली : बिल्कुल ज़रा-सा है। नीचे गंदा होता है पानी।

अनन्त : उसी को पी ले अभी।···पी ले ना।

लिली : पी लूंगी।

अनन्त : अभी तो कह रही थी प्यास लगी है ?

लिली : हां तो पी लूंगी।

अनन्त : (थोड़ी खामोशी के बाद) एक बात बता।

लिली : (थोड़ा-सा इंतजार के बाद) क्या ?

अनन्त : सच-सच बता···

लिली : क्या ?

अनन्त : इन लोगों ने तो हद ही कर दी। पता ही नहीं कहां गायब हो गए सब के सब। तीन दिन से किसी का पता ही नहीं है। तेरे बाप ने उन्हें जेल ही न भिजवा दिया

हो कहीं। किसी भी वक्त यहां पुलिस आएगी और बस ···लेकिन इतना आसान नहीं है। मजाक नहीं है मुझे पकड़ना।

लिली : क्यों ?

अनन्त : क्या मतलब ? तुझे लगता है आसान है ? पता लग जाएगा। मेरे पास तू है। समझ में आया कुछ ? मुझे पकड़ने से पहले तेरी गर्दन कट चुकी होगी। देखूंगा कौन पकड़ता है मुझे !

लिली : तुम कुछ पूछ रहे थे।

अनन्त : मैं ?

लिली : हां।

अनन्त : क्या पूछ रहा था ?

लिली : तुम कुछ पूछ रहे थे।

अनन्त : तू सच कह रही है ?

लिली : हां। पूछ रहे थे···

अनन्त : (असमंजस और मानसिक भय के साथ) मैं पूछ रहा था···मगर···मुझे···मेरे दमाग में···मुझे अब कुछ भूलने भी लगा है। क्या पूछ रहा था मैं कुछ याद है तुझे ?

लिली : मुझे क्या मालूम।

अनन्त : (किसी चीज़ को ठोकर मारकर) हत्तेरे की। साला··· दिखाई भी कम देता है और अब याद भी···हां···सुन··· एक बात बता···

लिली : (थोड़ा हंसकर) मुझे प्यास लगी है।

अनन्त : कहा न वही पानी पी ले···

लिली : वो गंदा पानी ?

अनन्त : वही पी। जो है वही पी। दूसरा पानी नहीं मिलेगा। पी रही है या मैं ठीक करूं तुझे ?

लिली : पी लूंगी।

अनन्त : साला। (थोड़ी खामोशी) मुझे लगता है आज कुछ होगा।

लिली : तुम मुझसे कुछ पूछ रहे थे।

अनन्त : मैं ?

लिली : हां।

अनन्त : मैं कुछ पूछ रहा था ?

लिली : (कुटिल हंसी) हां।

अनन्त : क्या पूछ रहा था ?

लिली : अभी जब मैंने पानी की बात की उससे पहले ?

अनन्त : सचमुच पूछ रहा था ?

लिली : (थोड़ी हंसी) हां।

अनन्त : मेरे दिमाग को भी पता नहीं क्या हो गया।···हां याद आया। मैं पूछ रहा था···

लिली : मैं पानी पी लूं···

अनन्त : अरे मैं तेरा गला न दबा दूं कहीं···मुझे जान-बूझकर भुलवा रही है ? (लिली जोर से हंस पड़ती है। अनन्त का गुस्सा और ज़्यादा बढ़ जाता है। वह किसी घायल सूअर की तरह उसकी तरफ बढ़ता है। वह सहमकर चुप हो जाती है) मैं साफ-साफ बताए दे रहा हूं मेरा दिमाग बहुत जल्दी खराब हो जाता है···

लिली : मैं···मैं माफी मांगती हूं···प्लीज़ अब मैं बीच में नहीं

टोकूंगी ।

अनन्त : पहले पानी पी ले ।

लिली : पी लूंगी ।

अनन्त : पी ले पहले, मैं कह रहा हूं ।

[लिली जैसे जीत महसूस करती हुई उठती है और सुराही का पानी एक मग में ढ़ालकर पीती है ।]

लिली : अब पूछो ।

अनन्त : बैठ जा । (टहलने लगता है) तेरे बाप ने रुपये नहीं दिए आखिर । तू कह रही थी करोड़ों रुपया है ।

लिली : हां ।

अनन्त : तेरा सगा बाप है ?

लिली : (थोड़ा ठहरकर) हां ।

अनन्त : ओह ! अजीब बात है ।

लिली : सगा मीन्स ?

अनन्त : क्या ?

लिली : सगा मतलब ?

अनन्त : असली बाप है ?

लिली : (जवाब नहीं देती)

अनन्त : मैंने पूछा, सगा बाप है ?

लिली : (जवाब नहीं देती)

अनन्त : तुझसे नफ़रत करता है ?

लिली : हां ।

अनन्त : क्यों ?

लिली : क्योंकि मैं पापा से नफ़रत करती हूं ।

अनन्त : क्या मतलब ? तू क्यों नफ़रत करती है ?

लिली : पता नहीं मगर मैं करती हूं ।

अनन्त : ये कैसे हो सकता है ?

लिली : है ।

अनन्त : मगर क्यों ?

लिली : क्यों पूछ रहे हो यह सब ? क्यों पूछ रहे हो ? किसलिए पूछ रहे हो ? (धीरे-धीरे हर वाक्य के साथ उसका क्षोभ बढ़ता जाता है) बिकाज़···बिकाज़···क्योंकि··· बिकाज़ आई वांटेड टु किल हिम···ऐंड आई ट्राइड··· ऐंड आई विल । मैं पापा को जान से मार देना चाहती थी और मैं तुम्हें भी जान से मार दूंगी···तुम्हें भी···आई विल किल यू···

[बेहद खौफ़नाक आवाज़ में किसी जंगली बिल्ली की तरह तड़पकर वह अनन्त पर टूट पड़ती है ।-घबराकर वह सिर्फ़ अपने आपको बचाने की कोशिश करता है । धीरे-धीरे आवाज़ें कम होती हैं और अंधेरा हो जाता है ।

इसके बाद के दृश्य बहुत धुंधली रोशनी में होते हैं क्योंकि वे धुंधले चित्र-भर होते हैं । लिली के परिवार के सदस्यों के जो एक दूसरे से डरे हुए हैं ।]

अनन्त : (हल्की रोशनी में, अब लिली का पिता बन चुका होता है जैसे डरावने सपने से घबराकर उठता है) कौन था ···कौन था यहां ? कौन था···आया ! आया···

आया···!

[यकायक उसे अपने सामने लिली दीखती है। वह लगभग अवाक् रह जाता है। दो क्षण लिली एक सख्त मूर्ति की तरह उसे घूरती है और यकायक झुककर आया हो जाती है]

लिली : आपने मुझे बुलाया साहब···

अनन्त : तु···तुम ?···मगर···वो···(बात संभाल लेता है) कहां मर जाते हो तुम लोग ?

लिली : यहीं थी साहब···आपने जैसे ही बुलाया···

अनन्त : पानी लाओ !

लिली : जी। (जाती है)

[दो क्षण में ही पानी ले आती है और बड़ी विनम्रता से झुककर पानी देती है। अनन्त पानी पीता है और गिलास लौटाता है। गिलास लेते वक्त आया फिर लिली लगने लगती है। अनन्त फटी आंखों उसे देखता है···हाथ उठाकर कुछ कहना चाहता है कि लिली दुबारा आया हो जाती है, विनम्र, और चली जाती है]

अनन्त : यह वहम नहीं हो सकता। वही थी···मैंने वह पानी पी लिया···वो पानी मैंने···मुझे···मुझे उसने ज़हर दिया है···उसने ज़हर दिया है···ये वहम नहीं हो सकता···नहीं हो सकता···तुमने मुझे ज़हर दिया है लिली, आई विल किल यू···उसने ज़हर···आया···आया···आया···

कोई है···कोई सुनता है···आया···

[वह चीखता है। अपना कोई नहीं। वह खुद लड़खड़ाता हुआ उठता है और रोशनी जलाने की कोशिश करता है]

अनन्त : रोशनी···रोशनी···बिजली को क्या हो गया ? बिजली जल क्यों नहीं रही ?···रोशनी···रोशनो जलाओ··· रोशनी···

[चीखता हुआ बाहर जाता है। थोड़ी देर आवाज़ आती रहती है फिर वह दूसरी तरफ़ से एक मोमबत्ती जली हुई, हाथ में लिए धीरे-धीरे वापस आता है। हल्की रोशनी किसी आकृति पर पड़ती है। वह लिली है जो मां बन गई है, बालों में ब्रश कर रही है। वह आकर ठिठक जाता है]

लिली : (मां बन चुकी है) बालू, रोशनी चली गई न ? हर रात रोशनी चली जाती है। इस घर में रात को रोशनी चली जाती है। हमेशा चली जाती है। सिर्फ़ रात में ही रोशनी नहीं रहती। अच्छा ही तो है। अंधेरा होगा तो कोई किसी की तरफ़ देख नहीं पाएगा। बालू···ओह ···नहीं।

[अनन्त की तरफ़ देखती है। वह थोड़ी देर पत्थर की तरह उसे घूरता है फिर सहज होकर थोड़ा झुक जाता है। झुकने के बाद वह बालू नौकर हो जाता है]

अनन्त : जी मैं यह मोमबत्ती कहां रख दूं ?

लिली : मगर···मगर अभी···वो···साहब···

अनन्त : जी साहब सो रहे हैं।

लिली : ओह···इसे रख दो···और···और जाओ तुम···जाओ···

अनन्त : (अत्यंत विनय से) जी।

लिली : लाओ मोमबत्ती मुझे दो (वह मोमबत्ती देता है) अब तुम जाओ।

[जाते वक्त वह फिर उसी तरह सीधे, पथराई निगाहों उसे घूरता है। वह कुछ कहना चाहती है। वह झुकता हुआ चला जाता है]

लिली : (मोमबत्ती की तरफ़ घूरती हुई) यह घर अंधेरा होने के साथ-साथ बदलने लगता है। लिली एक दूसरी लिली हो जाती है। मनचंदा की आंखों में कोई और घुसकर आ बैठता है। मैं किससे संबोधित हूं ?···बालू···बालू ···बालू···कहां मर गया तू···बालू···

[मोमबत्ती लिए हुए जाती है। अनन्त लिली के पिता के रूप में दिखाई देता है जैसे लम्बी यात्रा से थककर आया हो]

अनन्त : वक्त क्या हुआ है ? अभी सुबह नहीं हुई न ? अजीब बात है···दिन आता है तो आंधी की तरह दौड़ता धक्के देता हुआ निकल जाता है। रोकना चाहो तो रुकता नहीं। और यह रात···रात आती है तो जैसे पहाड़ की तरह जम जाती है और फिर हर रात चली जाने वाली यह बत्ती···आया···

[अचानक पीछे स्कर्टवाली लिली आ खड़ी होती है। वह देखकर चौंकता है]

अनन्त : लिली तुम ? तुम यहां क्या कर रही हो ?···गेट आउट···

लिली : यहां दस्तखत कर दीजिए।

अनन्त : क्या ?

लिली : आपके यहां दस्तखत चाहिए।

अनन्त : दस्तखत ? ओ गाड···

लिली : आप नाहक डर रहे हैं। यह कोई अदालती दस्तावेज नहीं है। सिर्फ़ मेरे स्कूल की प्राग्रेस रिपोर्ट है।

अनन्त : तो तूने अपनी ममी से दस्तखत क्यों नहीं करवा लिए ?

लिली : ममी ने कहा है पापा को दस्तखत करना है।

अनन्त : (चीख़कर) नहीं। ये साजिश है। ये तुम लोगों की साजिश है। कहां है रिपोर्ट बुक देखूं···

लिली : कुछ तो नहीं है। कह दिया न कि रिपोर्ट बुक है। बस ज़रा-सा दस्तखत···

अनन्त : (चीख़कर) देखूं···(सहसा वह भाग जाती है)···नहीं··· नहीं···

[लिली की दूर पर हंसी सुनाई देती है]

अनन्त : गाड्स सेक···फार गाड्स सेक···इस बूढ़े आदमी को बख्श दो तुम लोग···इस बूढ़े आदमी को बख्श दो··· बख्श दो···

[वह लगभग कराहने लगता है। लिली करीब-करीब पैशाचिक हंसी हंसती हुई दूर चली जाती है। उसकी हंसी सुनाई देती रहती है]

अनन्त : (भर्राई आवाज़) आया···कहां चले गए तुम सब लोग ···ओफ़ ये हंसी···ये···ये नन्हीं-सी लेकिन खौफ़नाक लड़की···मुझे इससे बचाओ···मुझे बचाओ···आया···

[अंधेरा हो जाता है। हंसी जारी। धीरे-धीरे हंसी समाप्त होती है। उजाले में लिली मूर्तिवत। वह मां हो चुकी है]

लिली : कौन है वहां ? वहां कौन है ? लिली···लिली तू यह घिनौनी हंसी क्यों हंसने लगती है ? बालू···बालू···

[बहुत चुपचाप अनन्त आकर झुका हुआ अदब से खड़ा हो जाता है]

लिली : बालू, साहब क्या कर रहे हैं ?

अनन्त : साहब आज बहुत परेशान हैं।

लिली : दवा दे दी ?

अनन्त : दी थी, साहब ने फेंक दी।

लिली : क्यों ?

अनन्त : बेबी साहब ने कहा—वे खुद पापा को दवा देंगी।

लिली : फिर।

अनन्त : जैसे ही लिली बेबी साहब के पास दवा लेकर पहुंचीं साहब घबरा गए।

लिली : हूं।

अनन्त : मेम साहब लगता है साहब की तबीयत ज़्यादा खराब है। डाक्टर बुला लूं ?

लिली : (सीधे उसकी आंखों में झांकती है) बालू, यहां सबकी तबीयत खराब है। साहब की। मेरी। लिली की। सभी की तबीयत खराब है यहां। बालू आज मौसम बहुत गर्म है ?

अनन्त : जी थोड़ा है।

लिली : नहीं बेहद गर्म है। एयरकण्डीशनर ठीक से काम नहीं कर रहे क्या ?

अनन्त : ठीक हैं मेम साहब।

लिली : उफ़ ! कितना जल रहा है सब कुछ।

अनन्त : जी···मैं कुछ ठंडा लाऊं पीने के लिए ?

लिली : बालू—नवल साहब कहां हैं ?

अनन्त : नवल साहब चले गए।

लिली : चले गए ? मुझसे बिना बताए चले गए ? बालू देखो क्या मुझे बुखार है ?

अनन्त : (थोड़ा अस्थिर होकर) जी ?

लिली : उफ़ कितनी तपन है। साहब सो गए न ?

अनन्त : जी, अभी-अभी सोए हैं।

लिली : उफ़···ये तपन···बालू मेरा हाथ छूकर देखो।

[अनन्त किसी खरगोश की तरह उसका हाथ अपने हाथ में ले लेता है। लिली की आंखें बंद हो जाती हैं]

लिली : आह नवल। तो तुम चले गए। बिना मिले चले गए। बिना पूछे चले गए। अब तुम्हें सिर्फ़ एक दस्तखत चाहिए मैं नहीं सिर्फ़ एक दस्तावेज़ की तलाश है तुम्हें मेरी नहीं। अच्छा है नवल। फिर कब आओगे ? इस बार भी मत पूछना कि मेरी देह इतनी तप क्यों रही है···

[अनन्त का हाथ रेंगता हुआ उसकी एक छाती तक पहुंच जाता है। सहसा वह सचेत

होती है]

लिली : ओह···तुम···

[अनन्त घबराकर उसे छोड़कर गायब हो जाता है]

लिली : ओह कौन था ? नवल यह तुम नहीं थे न ? क्या यह बालू था ? कौन था ?···इस अंधेरे में कौन, कहां किससे टकराता है ?

[अनन्त लिली के पिता के रूप में आता है]

लिली : ओह तुम क्या सोए नहीं ? तुम्हें यह मालूम है कि तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए यह अच्छा नहीं है कि इस तरह रात में तुम घूमो !

अनन्त : नवल आया था ?

लिली : हां ।

अनन्त : क्यों आया था यहां ?

लिली : तुम्हारा बिजनेस पार्टनर है तुम बेहतर जानते होगे ।

अनन्त : काश मैं सचमुच बेहतर जानता । ईश्वर के लिए मैं हाथ जोड़ता हूं—ईश्वर के लिए मुझे बता दो यह सब क्या हो रहा है ? यह सब चारों तरफ़ क्या हो रहा है ? क्यों हो रहा है ?

लिली : तुम बेहतर जानते होगे, मैंने कहा ना ।

अनन्त : यही अफ़सोस है । यही तकलीफ़ है मुझे । मैं जानता हूं इस घर में कहीं कुछ ऐसा हो रहा है जो मेरे खिलाफ़ है लेकिन···ईश्वर के लिए मुझे बता दो वह क्या है ?

लिली : क्या तुम नहीं जानते यहां क्या हो रहा है ? तुम अपना

वहम इस तरह दूसरों पर क्यों थोपते जा रहे हो आखिर ? बेहतर होता तुम अपने बूढ़े शरीर को और न थकाते । मैं और क्या कर सकती हूं ? और क्या अपेक्षा करते हो मुझसे ? अंधेरा होते ही—यह घर हम सबकी अपनी-अपनी दहशत हम सबके अपने खौफ की गुफा में बदल जाता है···आज तुम्हें महसूस हो रहा है न···तुम्हें आज इस डर का एहसास हो रहा है न ? मुझसे क्यों नहीं पूछते आज से चौदह बरस पहले जिस दिन मैंने इस घर में पांव रखा था मेरे लिए रातें उसी दिन से डरावनी होनी शुरू हो गई थीं । तुमने पूछा था उस वक्त कि रात उतरते ही कौन-सा ज़हर फैलना शुरू हो जाता था और हर सुबह मेरा चेहरा और ज़्यादा क्यों पीला दिखने लगता था ? हर रात एक डरावना जंगल बनकर मुझे घेरकर खड़ी हो जाती थी और उस अंधेरे जंगल में रेंगते हुए ठंडे सांप मेरी पेशियों पर लिपटना शुरू कर देते थे । मैं चीखती थी लेकिन मेरी आवाज़ कंठ से बाहर आते ही भाप बनकर उड़ जाती थी और मेरी असहाय आंखें देखती थीं तुम मेरी उस छटपटाहट से उदासीन उस जंगल के किनारे से टहलते हुए निकल जाते थे···

अनन्त : (उसी तरह पीठ मोड़े हुए) गलत बात मत कहो··· ईश्वर के लिए गलत बात मत कहो···ईश्वर के लिए··· गलत बात मत कहो । तुम जानती हो···तुम अच्छी तरह जानती हो । मेरा कलेजा बहुत मज़बूत नहीं हो पाया··· मेरे भेजे में कोई जंगली जानवर नहीं घुस पाया···यही है मेरी गलती । तुम बहुत अच्छी तरह जानती हो उस

जंगल में मैं भी भटका हूं। उस वक्त···उस वक्त··· (सहसा घूमता है) याद करो···ईश्वर के लिए ठीक-ठीक याद करो···शादी के बाद कितने दिन मुझे लगा तुम बहुत कोमल हो···तुम बहुत···तुम ओस की बूंद की तरह तरल हो और ज़रा-सा छूने-भर से शीशे की तरह टूट जाओगी···किस कदर डरावना दरिंदा मुझे अंदर से कुरेदने लगता था···द ब्यूटी एण्ड द बीस्ट···द ब्यूटी एण्ड द बीस्ट···मुझे लगता था कि वह दरिंदा अगर मैंने अपने ऊपर हावी हो जाने दिया तो तुम किसी मुलायम फूल की तरह टूट जाओगी···डर जाओगी···ईश्वर के लिए···तुम जानती हो···और तुम यह भी जानती हो··· ईश्वर के लिए झूठ मत बोलना··· तुम यह भी जानती हो कि अपने अंदर के जंगली जानवर को दो बरस दबाकर रखने के बाद जिस दिन जिस दिन···ओह तुम···याद करो वह दिन···ठीक से याद करो जब दो बरस तुम्हारे बिस्तर से दूर गुजारी हर डरावनी रात के बावजूद मैंने जाना···मैंने जाना···तुम मां बनने वाली हो। तुम भी जानती हो कौन था वो जंगली···नहीं नहीं कौन था वो कुशल नट जिसने फूल पर नाच चुकने के बाद भी फूल टूटने नहीं दिया···या···या···कैसा था वो फूल जो···जो···जिसे एक हल्का स्पर्श भी झुलसा सकता था लेकिन एक उद्दाम नृत्य···सचमुच उद्दाम रहा होगा वह नृत्य वरना उससे पैदा हुई यह लिली···ओफ़ ···किस कदर डरने लगा हूं मैं उससे। उसके पैदा होने के बाद बारह साल लगातार···हर रोज़ मैंने चाहा कि

मैं धोखे की उस एक रात का गला घोंट दूं···जान से मार दूं लेकिन तुम्हारे धोखे की वह नन्हीं, सुंदर-सी खतरनाक रात वह लिली अब मारी नहीं जा सकती···बल्कि ···बल्कि अब खुद वो···खुद वो

लिली : हम सबकी नियति है···अपनी-अपनी गुफाओं में सिमटे हम सब इंतजार कर रहे हैं···जो भी सिर झुका कर अंधेरे में आता दिखाई देगा वही मारा जाएगा···हम सबकी नियति है···हम सबकी (धीरे-धीरे अंधेरा होता है)

[आवाज़ दूर चली जाती है। थोड़ी देर सन्नाटा। अचानक लिली के पापा की आवाज़ सुनाई देने लगती है जैसे किसी दीवार के उधर से संबोधित कर रहा हो]

अनन्त : क्या तुम मेरी आवाज़ सुन रही हो? क्या तुम तक मेरी आवाज़ पहुंच रही है?

[धीरे-धीरे मंच के बीचों बीच एक प्रकाश-वृत्त आ जाता है]

अनन्त : मैं जानता हूं पिछले चौदह बरस एक ऊंची दीवार हमारे बीच रही है—पत्थर की सख्त, सर्द दीवार और मैं हर रोज़ इस दीवार के इस पार खड़े होकर एक सवाल उस तरफ़ फेंकने की कोशिश करता रहा हूं···

[मां के रूप में लिली वृत्त में आ खड़ी होती है, ऐसे जैसे सिर्फ़ झलसा रही हो]

अनन्त : तुम तक मेरी आवाज़ पहुंच रही है?···सिर्फ़ एक सवाल लगातार मैं इस दीवार के उस पार तुम तक पहुंचाने

की कोशिश करता रहा हूं···आखिर वो क्या था··· आखिर मैं कहां गलत हो गया था ? कहां चली गई थी वह तुम्हारी न छुई जा सकने वाली कोमलता ? क्या हुआ था उस दिन कि जिस डर ने दो बरस मुझे तुमसे अलग रखा वह डर किसी को तुम्हारे करीब धकेल गया ···क्या तुम तक मेरी आवाज़ पहुंच रही है···क्या मेरी आवाज़ तुम्हें सुनाई दे रही है···

[लिली अनमनी-सी खड़ी होती है कि अनन्त आ जाता है। वह अब लिली के पिता का तेज तर्रार दोस्त है। लिली उसे देखते ही भयभीत हो जाती है]

अनन्त : अरे रे क्या तुम डर गईं ? मिस्टर मनचंदा कहां है ?

लिली : जी वो तो अभी-अभी बंबई चले गए। कोई बहुत ज़रूरी फोन आ गया था।

अनन्त : ओह···तुम···तुम उनकी बेटी···

लिली : जो ··नहीं···मैं···

अनन्त : अरे हां बेटी कहां हो सकती है उनकी। अभी दो साल तो शादी के हुए हैं···

लिली : आप···आया···वालू···

अनन्त : अरे, उनको बुलाना बहुत जरूरी है क्या ? मैं ऐसा डरावना तो नहीं हूं। या हूं ? क्यों ? मेरे सींघ दिखाई दे रहे हैं या बड़े-बड़े दांत ? (वह हंसती है) ओह गुड। वंडरफुल। हंसीं तो। मैं तुम्हें···मेरा मतलव है···मैं नवल हूं मिस्टर मनचंदा से मेरी डीलिंग्ज होती रहती हैं···मगर तुम···

लिली : आप बैठिए मैं बालू को भेजती हूं···

अनन्त : अरे रे···ये तो ठीक नहीं है। ऐसे तो लगता है तुमने मुझे दुश्मन मान लिया वह भी अपना परिचय दिए बिना···

लिली : मैं मिसेज़ मनचंदा हूं···

अनन्त : (अति नाटकीय प्रशंसा से) ओह ! फाइन। फाइन। वंडरफुल। ह्वाट ए च्वायस ! फिर तो मैं बिल्कुल ही नहीं चाहूंगा कि आया या नौकर हमारे बीच दखल दे। सुनो···बाई गाड तुम···किस कदर खूबसूरत हो।···

लिली : मैं आपके लिए कुछ ठंडा या गरम···

अनन्त : लानत है···लानत है मुझ पर जो तुम्हें देखने के वाद भी कुछ और चाहे···

लिली : (सहमकर) क्या मतलब ?

अनन्त : कुछ नहीं लेकिन मैं माफी चाहूंगा मैं आदमी ज़रा खुली तबीयत का हूं मुझे तकल्लुफ़ पसंद नहीं है।

लिली : फिर ?

अनन्त : मुझे जो चाहिए मैं खुद मांग लूंगा।

लिली : तो बताइए न···

अनन्त : ना ना···वो ठंडा या गरम वाली वात मत कहिएगा। मैं इसके अलावा कुछ मांगने की सोच रहा हूं···

लिली : इसके अलावा···?

अनन्त : हां। इससे कहीं ज्यादा वेहतरीन···देखो मैं लफ्ज़ों के मामले में वहुत कच्चा हूं। कोई बात गलत निकल जाए तो बुरा तो नहीं मानोगी न ?

लिली : बुरा ?···मैं···मुझे अंदर जाने दीजिए···

अनन्त : अरे ! तो मैं क्या यहीं बैठा रहूंगा ? आखिर मैं मेहमान हूं···

लिली : मेरा मतलब है···

अनन्त : (थोड़ी धूर्तता-भरी राज़दारी से) वैसे एक बात बता दूं —अंदर आप ज़रूर चलिए लेकिन मुझे भी साथ लेकर···

लिली : ओ गाड···आप···आप जाइए यहां से···

अनन्त : अगर न जाऊं ?

लिली : मैं बालू को बुलाती हूं···

अनन्त : क्या कहोगी उससे ? मैं तुम्हारे साथ जबर्दस्ती कर रहा था ? कोई सुबूत ? वैसे तुम्हें एक बात बता दूं—तुम्हारी जैसी खूबसूरत लड़की से जबर्दस्ती न करने वाले को सज़ा मिलनी चाहिए।

लिली : आप चाहते क्या हैं ?

अनन्त : सच्चे मन से पूछ रही हो ? मैं तुम्हें चाहता हूं···

लिली : ओ गाड···नहीं···(सहसा पलटकर जाना चाहती है)

अनन्त : ना···ना। (उसे वलात् किसी उद्दण्ड की तरह पकड़कर खींच लेता है) गलत बात है···बिल्कुल गलत···

लिली : ओह···मुझे छोड़ दो···प्लीज़···(कराह) मुझे चोट लग जाएगी···(हल्की चीख)

अनन्त : ना···ना···

[अचानक वह अपने आपको मुक्त कर लेती है और हंसती हुई भागती है। अनन्त थोड़ी देर अचकचाकर उसकी ओर देखता है फिर उसके पीछे दौड़ जाता है। रोशनी के

दायरे में सन्नाटा हो जाता है लेकिन दूर कहीं दोनों के हंसने-दौड़ने और बीच-बीच में लिली के चीखने की आवाज़ें आती रहती हैं। अचानक किसी परिंदे की तरह वह हांफती हुई रोशनी के उसी दायरे में आ गिरती है। थोड़ा सांस रोककर सिर ऊपर उठाती है तो पाती है अनन्त वहीं खड़ा है किसी दैत्य की तरह। लिली के मुंह से चीख निकल जाती है]

लिली : अब बस। अब बहुत हो गया। अब नहीं। प्लीज़। मुझे अकेला छोड़ दीजिए और जाइए···प्लीज़···

अनन्त : यह नहीं हो सकता। अब जो शुरू हो चुका है वह बंद नहीं हो सकता। तुम डर रही हो ?

लिली : हां। प्लीज़ आप जाइए।

अनन्त : मैं नहीं डरता। समझीं, मैं किसी चीज़ से नहीं डरता और इसीलिए मेरी आदत है कि मैं दूसरों का डर भी छुड़ा दूं। तुम्हारा डर भी छुड़ाना होगा···

[वह उसकी ओर झुकता है। लिली भय से कांप जाती है]

लिली : नहीं···

अनन्त : डर किसलिए रही है लड़की···उठ···उठ···

[उसकी निगाहों में एक जादूगर का जैसा हिंस्र सम्मोहन आ जाता है। लिली उठती है।]

अनन्त : (उसे घूरता हुआ) तुम्हारा डर तोड़नाहो गा। तुम तो

मिस्र की एक ममी लग रही हो जिस पर मसाला लपेट दिया गया है और एक सोने के ताबूत में बंद कर दिया गया है। शर्म की बात है। यह अन्याय है···

लिली : (भय से छटपटाती हुई) देखो···देखो···आगे मत बढ़ना ···तुम आगे मत आना···

अनन्त : (उसी तरह सम्मोहित करता हुआ बोलता है) केंचुल छोड़। केंचुल से बाहर आ जा···तेरी आंखें तक धुंधली हो रही हैं···केंचुल उतार···केंचुल उतार···

लिली : (भयभीत) मैं चीख पड़ूंगी···बालू···

[उसकी चीख निकलने से पहले ही वह झपटकर उसका मुंह बंद कर देता है। वह फिर भी छटपटाती है तो वह दूसरे हाथ से उसकी बांह बर्बरता के साथ मरोड़ता है। दर्द से तिलमिलाकर लिली रो पड़ती है। अनन्त थोड़ा ढीला पड़ जाता है। वह सिसकियां लेती है। अनन्त उसे छोड़ देता है। वह घुटनों के बल बैठकर चेहरा हथेलियों में छुपाकर रोती है]

अनन्त : ऐसा मैंने क्या कर दिया है? ऐं? मामूली से मज़ाक में इस तरह तमाशा···हद ही हो गई। अब चुप भी होगी या नहीं? (वह रोती रहती है) देखो मैं कह रहा हूं अच्छा नहीं होगा।···ओफ, अच्छा आयम सारी। बस। मैंने माफी मांग ली न! (सिसकियां यकायक रुकती हैं मगर वह वैसे ही बैठी रहती है) अच्छा मैं जा रहा हूं। जाऊं? (वह सिर हिलाकर स्वीकृति देती

है) वाह! (हंसता है) ठीक है जाता हूं। कल आऊंगा···आऊं? क्यों? कल आऊं? बोलो···कल मैं आऊं···इसी वक्त···बोलो···

[सिहरकर वह 'हां' कह देती है। वह उसका चेहरा खुश होकर उठाना चाहता है लेकिन वह अपना चेहरा हथेलियों में गड़ाए रहती है। वह उसका माथा चूम लेता है]

अनन्त : ठीक है। थैंक्यू। कल आऊंगा···(जाने लगता है फिर लौटकर) लेकिन खबरदार अगर इस तरह कल भी डरपोक बनी रहीं···समझीं···

[मुस्कराता हुआ चला जाता है। उसे गया जानकर लिली प्रकृतिस्थ होकर उठती है फिर हाथ की कोई काल्पनिक चीज़ बलपूर्वक पटकती है और तन कर खड़ी होती है]

लिली : (आवाज़ देती है) बालू·· बालू···

अनन्त : जी···

[अनन्त आता है नवल के रूप में लेकिन धोखा देने को विनय से झुका हुआ]

लिली : (बिना उसकी तरफ़ देखे) तुम आ गए बालू?

अनन्त : जो।

लिली : वक्त क्या हुआ है?

अनन्त : दिन अभी नहीं डूबा है।

लिली : मैं थक गई हूं बालू···मेरा बिस्तर ठीक कर दो···

अनन्त : आपकी तबीयत तो ठीक है न···

लिली : (हाथ उसकी ओर फैला देती है) लो देखो मुझे लगता है···मुझे लगता है मेरा शरीर तप रहा है···

[अनन्त सावधानी लेकिन थोड़ा मजबूती से उसका हाथ पकड़ लेता है। लिली उसकी ओर घूमती है और अवाक् रह जाती है]

लिली : तुम ?

अनन्त : तुम थकावट की बात कर रही थीं। चलो लेट जाओ चलकर···

लिली : नहीं···मेरी तबीयत ठीक नहीं है···

अनन्त : टूटना···

लिली : क्या ?

अनन्त : तुम्हारा खोल टूट रहा है···चटख रहा है···

लिली : तुम कहना क्या चाहते हो ?

अनन्त : तुम्हारे खोल में दरारें पड़ रही हैं···अब इस खोल को पूरी तरह टूटकर गिर जाने दो···(बोलते-बोलते वह उसे लगभग दोनों हथेलियों में जकड़ लेता है और वे बेचैन हथेलियां जैसे उस खोल को और ज़्यादा चटखाने लगती हैं) अब यह खोल तुम्हारे लिए बेकार हो गया है। इसे टूटना ही होगा वरना तुम इसके अंदर सड़ जाओगी···

लिली : (कराह के साथ) नहीं···

अनन्त : इससे पहले कि इस सड़न से बदबू उठने लगे और तुम खुद अपने आपसे नफ़रत करने लगो···मुझे मदद करने दो···मुझे मदद करने दो···

लिली : (कराहना बढ़ जाता है जैसे उसे असह्य दर्द हो रहा हो)

नहीं मुझे मत तोड़ो···मुझे मत तोड़ो···मत तोड़ो···मत तोड़ो···

[उसकी आवाज़ डूबती जाती है और रोशनी का वह दायरा भी धुंधला होता जाता है। उस धुंधलके में ऐसा लगता है जैसे लिली को उठाकर कोई ले जा रहा है। उनके जाने के थोड़ी देर बाद रोशनी का दायरा गायब हो जाता है। अंधेरे में संवाद सुनाई देता है]

अनन्त : (आवाज़ उभरती है)
ठीक उसी दिन से इस घर में
हर रात रोशनी गायब हो जाती है
ठीक उसी दिन से इस घर में
हम सबके ऊपर
एक दूसरे से भय की नकाब चढ़ जाती है
हर रात रोशनी गायब होने के बाद !
हम सबका एक कांपता हाथ
अपनी गर्दन के पास
खड़ा हो जाता है
और दूसरा किसी दूसरे की गर्दन तलाशता है।

अनन्त : (नाइट गाउन पहने हुए, काले गाउन में लिपटी लिली की ओर बढ़ता हुआ) मैं एक बात कहना चाहता हूं तुमसे (वह सिर्फ़ उसे घूरती है) अब और आगे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।

लिली : तो मैं क्या करूं ?

अनन्त : तुम···तुम नवल को अब सावधान कर दो। अब मैं और ज़्यादा उसकी साजिश चलने नहीं दूंगा।

लिली : तुम खुद क्यों नहीं कह देते ?

अनन्त : (अवाक् रह जाता है) तुम भी···तुम भी उसी की तरफ हो। तुम भी शामिल हो इस साजिश में ? कह दो तुम नहीं हो ? कह दो तुम नहीं हो···(लिली की हल्की ज़हरीली मुस्कराहट) तो···तो वे दस्तावेज़ तुम्हीं ने मुझसे धोखे से बनवाए हैं ? नवल और तुम और लिली···तुम तीनों ने मिलकर धीरे-धीरे खाना शुरू किया है मेरा अधिकार···मेरी जमीन···मेरी जमीन मेरे पैरों के नीचे से खींचने को यह साजिश···लेकिन इससे पहले···इससे पहले ही···

[वह गला घोंटने बढ़ता है। धीरे-से अंधेरा हो जाता है। अंधेरे में ही लिली की आवाज़ उभरती है]

लिली : ओ मेरे पिता
यह सच है—यह बिल्कुल सच है
हर रात रोशनी गायब हो जाने के बाद
तुम्हारा हाथ मैंने देखा है···
मैंने देखे हैं उस पर लगातार बढ़ते नाखून
मैंने देखी है उन हाथों की हिंसक तलाश
मैंने देखा है उन हाथों का निरुपाय कंप
किस चीज़ की हत्या करने आता है वह हाथ ?
ओ मेरे पिता
विश्वास करो ओ मेरे पिता

सिर्फ़ इसलिए
कि तुम किसी सत्य के उस तरफ़ खड़े हो
सिर्फ़ इसीलिए
कि जो कुछ हुआ, तुम उसके विरुद्ध हो
एक हत्या करने आते हो हर रात
मेरी
ओ मेरे पिता
विश्वास करो ओ मेरे पिता
जो कुछ हुआ
उसे इस तरह मारना नामुमकिन होता है !
नामुमकिन होता है !
किसका बदला लेते हो तुम
मुझसे किसका बदला लेते हो ?
देखो न
तुमसे बचते रहने की कोशिश में
मैं वक्त से पहले ही
औरत बन गई
वक्त से पहले ही
मां की कनपटियों पर बाल
सफेद हो गए
वक्त से पहले ही तुम बूढ़े हो आए हो
बूढ़े हो आए हो !
अक्सर तुम पर मुझको
आने लगता है रहम···

[इन दोनों संवादों के साथ हल्की रोशनी

में दोनों अलग-अलग खड़े दीखते हैं···अनन्त पिता के रूप में और लिली लिली के ही रूप में]

अनन्त : (जैसे अपने हाथों की झुर्रियां देखता हुआ) रहम—हे ईश्वर रहम···हे ईश्वर रहम···रहम···

[धुंधली रोशनी समाप्त। पहले जैसे सामान्य उजाले में लिली और अनन्त खड़े दीखते हैं जैसे जड़ हों। धीरे-धीरे अनन्त के शरीर में कंपन होता है। दरअसल वह एक बेढंगी हंसी है जो उभर रही है।]

अनन्त : (बेढंगी हंसी हंसते हुए) सब एक जैसा है। तेरे बाप में और मुझमें सब एक जसा है। सब कुछ एक जैसा है। बस सिर्फ़ एक फरक है। क्या ?

लिली : (बोलती नहीं सिर्फ़ उसकी ओर देखती है)

अनन्त : क्या फरक है। बेंत। गैंडे की खाल का बेंत मेरे पास नहीं है। होता तो जानती है क्या होता ? क्या होता ?

लिली : (फिर वैसे ही देखती है)

अनन्त : गैंडे की खाल का बेंत होता तो तेरे बाप का भाई मेरी बीबी के पास आता। किया क्या जा सकता है। गैंडे की खाल का बेंत नहीं है न वो खुद तेरे बाप के भाई के पास चली गई।

लिली : किसके पास ?

अनन्त : तेरे बाप का भाई। या कोई भी वैसा ही। (बेढंगी हंसी हंसता है) बिल्कुल एक जैसी कहानी है। मगर एक फरक और है। क्या ?

लिली : क्या ?

अनन्त : तेरा बाप तुझे मार नहीं पाया न ? मैंने मार दिया।

लिली : किसको ?

अनन्त : बेटी को। मां भाग निकली। बच गई। उसे भी नहीं छोड़ता। बिल्कुल एक जैसी कहानी···एकदम एक ही···

[कहता हुआ उसकी तरफ़ बढ़ता है। रोशनी फिर सिमट कर एक दायरा रह जाती है···लिली पर। लिली व्यस्तता से अपनी कमर में एक ऐप्रन बांधने लगती है]

लिली : ओफ्फोह बंधेगा ही नहीं। जरा ये बांध दो न। वैसे ही देर हो गई है मेमसाहब बिगड़ने लगेंगी···

अनन्त : ठीक है। लाओ। (बांधता है और उसके कंधे पकड़ कर थोड़ा भावुक हो जाता है)

लिली : मुझे देर हो जाएगी न।

अनन्त : हां ठीक है। जाओ। देर हो जाएगी। मेमसाहब बिगड़ेंगी। मगर मेमसाहब को एक दिन यह भी बता दो कि जिसके नाम पर तुम यह सब करती हो उसे तुम पर बिगड़ने का हक भी नहीं है।

लिली : बता दिया था।

अनन्त : फिर ?

लिली : मेमसाहब ने कहा—दे दो बिगड़ने का हक।

अनन्त : फिर ?

लिली : लेकिन मैंने कहा—मैंने यह हक दिया तो लेकिन उसने यह हक लिया कभी नहीं।

अनन्त : झूठ बोलती हो।

लिली : अब मुझे देर हो रही है ।

अनन्त : लेकिन···लेकिन···

लिली : क्या ? (खामोशी । अनन्त की बेचैनी) क्या लेकिन ?

अनन्त : नहीं । अब तू जा । तू चली जा वरना किसी दिन कोई··· किसी दिन कोई जबर्दस्ती न कर बैठूं ।

लिली : (सहसा हंसती है) जबर्दस्ती ? अरे तो तुम जबर्दस्ती करोगे तो क्या मैं रोक पाऊंगी ?

[वह फिर हंसती है । अनन्त अवाक् देखता रह जाता है । वह चली जाती है]

अनन्त : ओरे पागल ! तुझे पता है यह तूने क्या कहा था ? हे भगवान पता नहीं यह क्या हुआ है मुझको ! स्साला··· पहली बार डरपोक हो गया हूं और वह भी तेरे आगे । दुनिया में हर कोई मुझसे डरता है लेकिन मैं तुझसे डरता हूं । देखो तो । कैसा मजाक है···गुड़िया जैसी नन्हीं लजीली, मुलायम···तू सामने आती है तो डरने लगता हूं कहीं इस जंगली हाथ से छू लूं तो तू टूट ही न जाए ।

लिली : (थोड़ी दूर से उसकी आवाज़) हां—हाथ मत लगा···तू हाथ मत लगा—मैं टूट न जाऊं इस डर से तू हाथ मत लगा···तू तब तक हाथ मत लगा जब तक मैं तालाब की तरह सूख न जाऊं···हाथ मत लगा···हाथ मत लगा ।

[आवाज़ कराह में बदल जाती है । अनन्त एक मजबूर टूटी हुई हंसी अपने आप पर हंसता है]

अनन्त : तुम लोग जानते हो मैं क्यों हंस रहा हूं ? मैं बताऊं मैं क्यों हंस रहा हूं ? उस धमकी के बाद मैं सचमुच कुछ कर न

बैठूं इसका खयाल और लोग भी रखते हैं । कैसे ? पूछो कैसे ? (वही टूटी हुई मजबूर हंसी) पूछो कैसे ? जेल में बंद जो कर दिया । दो साल की जेल । दो साल जेल में रहूंगा । ठीक ही तो है । उस अभागी के लिए ठीक ही है । दो साल में कुछ पक्की हो जाएगी—कुछ मजबूत हो जाएगी—इतना डरने की ज़रूरत नहीं रहेगी ।

[हंसता है । हंसी थोड़ी देर टूट-टूटकर जारी रहती है उसके बाद वह जड़ की तरह खड़ा हो जाता है । सन्नाटा होने पर लिली आती है अपनी कमर का ऐप्रन खोलती है । उसे हाथ में लिए हुए संवाद बोलती है]

लिली : ओह ! आज इतनी जल्दी अंधेरा घिर आया । बादल भी तो घुमड़ रहे हैं—जैसे···जैसे···मितली उठ रही हो··· क्या तारीख होगी ? बरसात तो बहुत जोर से होगी लगता है···

[अचानक हाथ का ऐप्रन किसी नन्हें शिशु में बदल जाता है]

लिली : तुझे भी नहीं अच्छी लगती न बरसात ? मुझे भी अच्छी नहीं लगती । उन्हें भी अच्छी नहीं लगती थी । अब तो दो बरसातें बिता चुके होंगे जेल में । यहां थे तो कितना छटपटाने लगते थे । लेकिन जाने क्या हो जाता था···मुझे छूने से डरने लगते थे और फिर बरसात के पानी में नहाते थे । उस वक्त उस वक्त उनकी देह पर पानी टिकता नहीं था । छनछनाकर भाप बन जाता था । क्यों री, अब तू कहेगी न अपने बाप से कि बरसात तो

मुझे भी अच्छी नहीं लगती थी···बिजली कड़कती थी तो छुरी की तरह आंतों में उतरती चली जाती थी··· मगर सुन ये तेरी नाक बड़ी गड़बड़ है और ये आंखें भी। ये चुगली न कर दें कहीं···मगर···मगर···उनसे छुपेगा क्या। सुन क्या तू उनको नहीं बता सकती कि इसमें गलती मेरी नहीं है। बरसों हो गए मुझे उन लोगों का हुक्म बजाते हुए। हुक्म मानने की आदत पड़ चुकी है। मैं चाहूं या न चाहूं शरीर अपने आप हुक्म मानने लगेगा। बोल री इसमें मेरा क्या कुसूर है? ऐं···बोल ना···

[इस बीच अनन्त धीरे-से आकर उसके पीछे खड़ा हो जाता है। लिली को शायद आहट मिलती है। पीछे देखकर सन्नाटे में आ जाती है]

लिली : तुम ?

अनन्त : फिर? मुझे नहीं आना था? दो बरस की जेल के बाद भी नहीं आना था···

लिली : नहीं···नहीं मेरा मतलब···

अनन्त : (निहायत सर्द आवाज़ में बोलता है) बच्चा किसका है ?

लिली : (बच्चे को अपने में छुपाती हुई) नहीं।

अनन्त : बच्चा किसका है, मैं पूछ रहा हूं ?

लिली : नहीं···तुम···

अनन्त : दो महीने से तो ज़्यादा का नहीं होगा अभी···किसका है ?

लिली : मैं···मैं···(उसकी आवाज़ थरथराने लगती है)

अनन्त : तेरा है···

लिली : (बच्चे को और सटाती है) ओह···मैं···

[लिली की आवाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा घुटन और फंसाव आता जाता है और अनन्त की आवाज़ मेटलिक होती जाती है। वह प्रतिध्वनि के साथ बोलता है]

अनन्त : दो साल···ये हैं तेरे दो साल···किसका है ये बच्चा ? किसका है ?

[सहसा बच्चा छीन लेता है। लिली चीख़ पड़ती है और हाथ घुटनों पर टिक जाते हैं जैसे वह बेहद कमजोर हो गई हो]

अनन्त : किसका क्या। किसी का भी हो यह बच्चा—मेरा तो नहीं ही है और इस बीच···इस बीच···नहीं मेरे दो साल किसी और के नाम नहीं लिखने दूंगा···नहीं लिखने दूंगा···

[वह फटी आंखों उसे घूरती है। अनन्त बच्चे को किसी चूजे की तरह लटका लेता है]

लिली : उसे मत मारना···नहीं···उसे मत मारना···

अनन्त : दो बरसों के बीच किसी दूसरे का यह थूक अपने चेहरे पर ? नहीं···बिल्कुल नहीं···

लिली : (बेहद भयभीत कांपती हुई लड़खड़ाती उठती है, पीछे हटती जाती है) उसे मत···मारना···उसे···मत··· मारना···

[यकायक चीखती है और अंधेरे में खो जाती है। अनन्त बच्चे का गला दबा देता है। और फिर उसकी लाश सावधानी से नीचे रखता है]

अनन्त : किसी दूसरे का यह थूक अपने चेहरे पर···नहीं। बिल्कुल नहीं···कहां चली गई तू ? अब तुझे भी जिंदा नहीं छोड़ सकता···कहां है ? कहां है तू ? सामने आ···

[देर तक चिल्लाहट गूंजती है। अंधेरा हो जाता है। सन्नाटा। लाउडस्पीकर पर यकायक एक आवाज़ उभरती है]

आवाज़ : अनन्त, तुम सुन रहे हो। अनन्त, तुम्हें आगाह किया जाता है कि पुलिस तुम्हें चारों तरफ़ से घेर चुकी है···पुलिस तुम्हें घेर चुकी है···किसी तरह की चालाकी या भागने की कोशिश बेकार होगी···अनन्त, बेहतर हो तुम मिस लिली को बाहिफाज़त बाहर भेज दो और पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दो···तुम्हें आगाह किया जाता है···

[इस संवाद के शुरू होने के बाद यकायक वहां इस तरह झटके से उजाला होता है जैसे सर्चलाइटें जल उठी हों। रोशनी में अनन्त और लिली अपने-अपने स्थान पर सिमटे दिखाई देते हैं। आवाज़ पर चौंककर लिली दरवाज़े की ओर देखती है और अनन्त लिली की ओर। आवाज़ जारी]

अनन्त : तो आखिर···तो आखिर वो आ गए···(लिली उसकी

ओर देखती है) वो आ गए। तुम बहुत खुश हो रही हो ?

लिली : अब वो लोग क्या करेंगे ?

अनन्त : भागना चाहती हो ? (वह उसे घूरती है) जाना चाहती हो ? बहुत आसान है। बाहर चारों तरफ़ पुलिस वाले हैं। उनके साथ शायद तुम्हारा बाप होगा। बाहर निकल जाओ। दरवाज़ा खुला हुआ है सिर्फ़ एक तेज छलांग लगाने की ज़रूरत है। और फिर तुम भागती भी बहुत तेज हो। मैं तो अब बूढ़ा भी होने लगा हूं। बस दरवाज़े की तरफ़ झपट लेने की बात है और बस···

लिली : मुझे मालूम है।

अनन्त : फिर ?

लिली : लेकिन मैं अभी लड़ाई देखूंगी।

अनन्त : किसकी ? मेरी और पुलिस की ? ओ धूर्त लड़की मैं ईश्वर की कसम खाकर कह सकता हूं तेरी जैसी बदमाश लड़की मैंने जिंदगी में नहीं देखी, कभी नहीं देखी। (लिली अपनी उंगली की पट्टी देखती है)

लिली : पुलिस अभी गोली चलाएगी न ?

अनन्त : क्या ?

लिली : और क्या ? तुम लोगों के साथ बंदूकों से लड़ाई होती है न ?

अनन्त : तू लड़ाई देखने के लिए बैठी है ?

लिली : हां।

अनन्त : मेरी और पुलिस की लड़ाई देखेगी ? साला···तमाशा हो गया। सुना था···(बात रोककर) तू फिल्में देखती

हैं ?

लिली : हां।

अनन्त : तभी। तभी लड़ाई देखने का शौक जागा है। बहुत-सी पिक्चरें देखी हैं ना ?

लिली : हां। बहुत-सी।

अनन्त : और वो भी पिक्चर देखी होगी जिसमें एक बादशाह अपने गुलाम को शेरों से लड़वाता है···

लिली : देखी थी।

अनन्त : आज वही लड़ाई देखेगी तू। है ना ? वही लड़ाई देखेगी। शेर के आगे गुलाम कैसे मरता है ? शेर झपटता गुलाम बचने की कोशिश करता है···दिल गुर्दे की ताकत समेट-कर शेर का थोड़ा बहुत सामना करने की कोशिश करता है लेकिन पलक मारते ही लोग देखते हैं शेर गुलाम की कमर अपने जबड़ों में दबाए पिंजरे का चक्कर लगाने लगता है। उस वक्त गुलाम छटपटाता नहीं है। करा-हता भी नहीं···

लिली : वो हंस रहा था···

अनन्त : हां वो हंसता है। अगर उसे तुम हंसी मान लो। बल्कि अच्छा है कि हंसी मान लो। काले चेहरे पर सफ़ेद दांत चमकते हैं।

लिली : जानते हो एक बार···एक बार ममी···यह देख रही थीं···क्या नाम था उस पिक्चर का ? पता नहीं। इतनी पिक्चरें देखी हैं कि नाम ही याद नहीं रहते।

अनन्त : अपनी मां के बारे में तू कुछ बता रही थी न !

लिली : हां। ममी। एक बार मैं ममी के पास बैठी पिक्चर देख

रही थी। पिक्चर में शेर ने गुलाम को गिरा दिया और···और उसे पंजों से नोचने लगा···तो ममी न··· ममी एकदम जोर-जोर से सांस लेने लगीं और उनका हाथ इतना गर्म हो गया जैसे आग हो। ममी ने आगे कुछ नहीं देखा। सीट पर पीठ टिकाए सांस लेती रहीं।

अनन्त : (हंसता है)

लिली : क्यों हंस रहे हो ?

अनन्त : मुझे पता है तेरी मां ऐसे क्यों करने लगी थी।

लिली : हां।

अनन्त : क्या हां ! मैं बताऊं वह ऐसे क्यों कर रही थी ?

लिली : मुझे पता है।

अनन्त : क्या ?

[यकायक बाहर से फिर आवाज़ आती है]

आवाज़ : अनन्त। तुमको आगाह किया जाता है···अनन्त तुमको आगाह किया जाता है।··अनन्त किसी किस्म की चालाकी मत करना···पुलिस तुम्हें चारों तरफ़ से घेर चुकी है तुम लड़की को चुपचाप हमारे हवाले कर दो।···अनन्त···तुम्हें आगाह किया जाता है···

अनन्त : (खीझकर एक निरुपाय गुस्सा उछालते हुए) तुम्हें आगाह किया जाता है···अरे मैं कहता हूं···भाग जाओ यहां से हरामजादो भाग जाओ वरना अच्छा नहीं होगा।

[चीखकर कहने के बाद धीरे-धीरे हंसता है]

लिली : क्या है ?

अनन्त : क्या है ? अरे तू नहीं समझी ?

लिली : क्या ?

अनन्त : दरवाजा खुला है। पुलिस वाले चारों तरफ़ हैं। अगर थोड़ी देर मैं और न बोलता तो वो लोग सोचते शायद यहां कोई नहीं है और हो सकता है यहां घुस ही आते। अब मेरे चिल्ला देने के बाद वो ये तो समझ ही जाएंगे कि मैं यहां हूं।

लिली : उससे क्या होगा ?

अनन्त : वो लोग बहुत देर तक दूर-दूर से ही चिल्लाते रहेंगे, नज़दीक नहीं आएंगे। तुम्हारे शेर गुलाम से ज़्यादा डरते हैं। आसानी से पास नहीं आएंगे। दूर-दूर चक्कर काटते रहेंगे। फिर दल बनाकर बंदूकें लिए हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ेंगे और उस बीच अगर मुझे छींक भी आ गई न, ईश्वर कसम अगर सिर्फ़ छींक भी आ गई तो एक दूसरे पर गिरते पड़ते फिर पीछे भाग जाएंगे। साला —शेर। तेरा बाप भी आया होगा। क्यों ?

लिली : हो सकता है।

अनन्त : हो सकता है नहीं, है। तेरी जान बचाने नहीं। अपनी बहादुरी दिखाने भी नहीं। जानती है क्यों ? क्यों आया होगा ? वो जरूर आया होगा मगर क्यों, बोल ?

लिली : क्यों ?

अनन्त : जिसमें वो भी लड़ाई देखे। सत्तर आदमी मिलकर किसी को घेर लेते हैं तो फिर क्या होता है—कैसे उसको मारते हैं···मजा आएगा न देखने में। साला···मजा लेगा। और अभी क्या है। घेरा डाला है। फिर पकड़ेंगे। उसके बाद पिटाई होगी। फिर मुकदमा चलेगा···और सबसे

मजेदार मुकदमा कौन-सा होगा ? सबसे मजेदार जिसको देखने के लिए भीड़ लगी रहा करेगी···सबसे मजेदार मुकदमा होगा वो जिसमें तेरा बाप कहेगा···इस गुण्डे ने···इस मासूम लड़की को उड़ाया, जबर्दस्ती अपने घर में बंद रखा और दस बार इसके साथ मुंह काला किया ···साला···मुंह काला किया। मुंह काला कैसे होता है, ऐं ? कुछ नहीं करूंगा फिर भी उनको ये मूं काला दिखेगा। साबुन से···ख़ुशबूदार साबुन से नहाता नहीं हूं न। मूं काला किया। तेरे साथ मैंने मूं काला किया है ? मैंने मूं काला किया है तेरे साथ ? पचास हजार रुपया तेरा बाप देगा वकील को और एक लाख रुपया देगा जज साहब को कि साबित करो इसने मूं काला किया। लाख रुपया है, करोड़ों है लेकिन पचास हज़ार लड़की छुड़ाने का नहीं देगा। मुझे जेल भिजवाने का दे देगा··· खुशी खुशी।

आवाज़ : अनन्त हम तुम्हें आगाह करते हैं···हमें मालूम है तुम अंदर हो। अनन्त बेहतर हो कि तुम लड़की को चुप-चाप हमारे हवाले कर दो और हथियार डाल दो। हम वायदा करते हैं तुम्हारे साथ ज़्यादा से ज़्यादा नरमी बरती जाएगी। अनन्त हम आगाह करते हैं···

अनन्त : (हंसता है) नरमी बरती जाएगी। थूह साला। (थोड़ी देर खामोश लिली को घूरता है) ए सुन। एक बात बता···

लिली : क्या ?

अनन्त : तू मुझसे ब्याह करेगी ? (जवाब नहीं देती, घूरती रहती

है) तू मुझसे ब्याह कर लेगी तो भी यही गवाही देगी ?' —मगर तेरे बारे में तो यह सोचना ही बेकार है। साला फिर वही किस्सा शुरू। नाबालिग है, सुंदर है···शादी कर भी ली तो तुझे देखकर ही रहम आ जाएगा। मैं सोचता रहूंगा, अभी बच्ची है, मासूम है और मालूम होगा गोद में बच्चा लिए कहीं से चली आ रही है··· कहेगी इतने दिन से हुकुम सुनते-सुनते शरीर की भी आदत पड़ गई है हुकुम मानने की···साला

लिली : तुम सरेण्डर क्यों नही कर देते ?

अनन्त : क्या ?

लिली : उन लोगों के सामने हाथ क्यों नहीं उठा देते ?

अनन्त : हाथ क्यों नहीं उठा देते ? (अचकचाकर घूरता रह जाता है) हां। हाथ क्यों नहीं उठा देता, यही तो मैं भी सोच रहा हूं। हाथ क्यों नहीं उठा देता।···यही चाहते हो न तुम लोग ? इसी की लड़ाई लड़ने आ गए हो न ? मेरा भाई अपने आप नहीं जाता था तेरी मां के पास। वो खुद बुलाती थी। अपनी गरज से। उसे जान से मार डाला तब क्या किया पुलिस वालों ने ? और मैंने क्या किया था ? पचास हजार रुपया मांगा था न ? लाखों रुपया, करोड़ों रुपया है तो मैंने सारा छीन तो नहीं लिया। सिर्फ़ पचास हजार मांगा था। इसके लिए हाथ उठवाए जा रहे हैं—सत्तर आदमी बंदूक लेकर आ गए—हाथ उठा दो ! साला। अब एक बात बताऊं—फंस तो गया ही हूं···जो होना है वो तो होगा ही और तू अदालत में गवाही तो देगी ही फिर अपनी हविस भी क्यों न पूरी

कर लूं। जबर्दस्ती का एक ही मुकदमा तो चलेगा चाहे झूठा या सच्चा। फिर सच्चा ही सही—

लिली : क्या मतलब ?

अनन्त : मतलब तू बहुत अच्छी तरह जानती है लड़की। (लिली हंस पड़ती है) क्या है ?

लिली : जो जबर्दस्ती करता है वह दावे नहीं करता।

अनन्त : क्या मतलब ? मैं जबर्दस्ती नहीं कर सकता ?

लिली : कर क्यों नहीं सकते हो लेकिन उसके लिए शोर मचाने की क्या ज़रूरत है ? और फिर जबर्दस्ती का सवाल ही कहां उठता है ?

अनन्त : ओफ़···

आवाज़ : तुम्हें आगाह किया जाता है कि आसानी के साथ बच्ची को हम लोगों के हवाले कर दो। अनन्त, याद रखो पुलिस तुम्हें चारों ओर से घेर चुकी है। तुम चारों ओर से घिरे हुए हो ··अनन्त···

अनन्त : (ऊंची आवाज़ में चीखकर) हां···हां···हां···मुझे मालूम है तुम लोग घेर चुके हो। मुझे मालूम है। मैं बहरा नहीं हूं अंधा भी नहीं हूं। देख रहा हूं। और यह आज से नहीं है। जब से मैं पैदा हुआ हूं तभी से घेर रहे हो तुम लोग। देख लूंगा तुम लोगों को भी। तुम लोगों भी देख लूंगा ···देख लूंगा··

[झटके से उछलकर बाहर निकल जाता है। बाहर से ही उसकी आवाज आती है]

अनन्त : सुन रहे हो तुम लोग। तुम लोग सुन रहे हो ? एक बात कान खोल कर सुन लो—लड़की मेरे कब्जे में है। अगर

तुम लोगों ने कोई गड़बड़ की और घण्टे-भर में यहां से वापस नहीं गए तो लड़की ज़िंदा नहीं बचेगी—मैं कसम खाकर कहता हूं—एक घण्टे में अगर तुम लोग यहां से नहीं गए तो तुम्हें लड़की की लाश मिलेगी। सुन रहे हो···

[एक गोली चलने की आवाज़]

अनन्त : अरे ओ बदमाशो। साला। बाद में मत रोना कहे देता हूं। मैं कसम से कह रहा हूं लड़की की मौत के जिम्मेदार तुम लोग होगे वरना भाग जाओ यहां से···मैं कसम···

[फिर गोली की आवाज़। अनन्त की आवाज़ तुरंत कट जाती है। गहरा सन्नाटा। लिली दरवाज़े की ओर देखती है। अपने आपको बेहद कठिनाई से साधे हुए दरवाज़े पर अनन्त दिखाई देता है उसने कंधे के नीचे हथेली लगा रखी है। बुरी तरह खून बह रहा है। वह दरवाज़े के अंदर आकर एक किनारे टिक से जाता है और बड़ी विकृत हंसी हंसता है। देख कर पता नहीं लगता वह हंस रहा है या रो रहा है]

लिली : क्या हुआ है तुम्हें ? (वैसे ही हंसता है) तुम्हें गोली लगी है ?

अनन्त : हां। साला। धोके से मार दिया।

[वैसे ही हंसता और हल्के-हल्के झूमता है जैसे उसे नशा चढ़ रहा हो। लिली उसकी ओर बढ़ती है]

अनन्त : हां अब भाग जा। दरवाज़ा खुला है। निकल जा। मैं

कह रहा हूं चली जा यहां से !

लिली : छड़ी, गैंडे की खाल की छड़ी···नीले-नीले निशान···

अनन्त : क्या ?

लिली : (थोड़ा सख्ती से) बैठ जाओ। मैं कह रही हूं बैठ जाओ।

अनन्त : मुझे हुकुम दे रही है ?

लिली : बैठ जाओ।

अनन्त : साला। (डगमगाता हुआ एक ओर बैठ जाता है) तू अब जा, निकल जा यहां से।

लिली : छड़ी···गैंडे की खाल की छड़ी···पड़ती है तो नीले-नीले निशान उभर आते हैं···

[लिली एक कपड़ा ले आती है]

अनन्त : क्या कर रही है तू ?

लिली : नीले-नीले निशान अंदर ही अंदर सड़ते जाते हैं।

अनन्त : (जानवर की तरह चीखकर) खबरदार अगर नजदीक आई। कोई ज़रूरत नहीं है मुझे तेरी दया की।··· अरे···अरे···तू···अब मुझसे बदला लेगी—तू मुझे इस हालत में मारना चाहती है ? मैं कह रहा हूं···

[उसे खांसी आ जाती है। खांसी के साथ ही दर्द उठता है। कराहने लगता है।]

लिली : अब ज़्यादा चिल्लाओ मत। बहुत हो गया। पट्टी बांधने दो।

अनन्त : (समर्पण-भरी कराह और चीख) आह ! लाखों रुपया है, करोड़ों है लेकिन···लेकिन पचास हजार नहीं देगा···

[वह मानती नहीं। काफ़ी वक्त लगाकर उसको पट्टी बांधती है। उसकी आवाज़

अब डूबने लगती है।]

लिली : आराम नहीं आया ? अच्छा नहीं लगा ?

अनन्त : तू कहां है ?·· तू कहां है ?

लिली : क्यों प्यास लगी है ?

अनन्त : तू कहां है ? भाग गई न ? भाग गई ! साला···अच्छा हुआ।

लिली : मैं यहां हूं। भागी नहीं हूं। भागूंगी भी नहीं।

अनन्त : आखिर चली गई···गई···साला·· मुझे भी क्या हो रहा है···लगता है कहीं आसपास ही बोल रही है—

लिली : क्या—क्या तुम्हें मैं दिखाई नहीं दे रही हूं ?

अनन्त : हो गया। सब खतम हो गया। साला। कैसा अजीब है। अच्छा हुआ···अच्छा हुआ जबर्दस्ती नहीं की उसके साथ। बेकार में ही···बेकार में ही···

लिली : तुम जो कह रहे हो वो मैं सुन रही हूं। तुम्हें मेरी आवाज़ नहीं सुनाई दे रही ? तुमने जान-बूझकर मेरे साथ जबर्दस्ती नहीं की न ? क्यों नहीं की जबर्दस्ती··· क्यों नहीं की जबर्दस्ती तुमने···क्यों···

[उसे झकझोरती है वह फटी आंखों घूरता हुआ चुपचाप नीचे लुढ़क जाता है]

लिली : (अवाक् उठती है) बस···बस···बस सिर्फ़ इतना। बस··· सिर्फ़ इतना···सिर्फ़ यहीं तक···इससे आगे कभी नहीं बढ़ोगे तुम लोग ? इससे आगे···

ओ ढीले कंधों वाले इतिहास
हर सफ़र इसी तरह
रास्ते को बीचों-बीच से तोड़

उसी पर फिर चलना कर देता है शुरू···
वह देखो हर तरफ़
इस अंधे गलियारे में
आकर लटक गए हैं पीले चेहरे
ठहरे पांव
ठंडे हाथ
ओ ढीले कंधों वाले इतिहास···
आज से मैं खुद भी
अंधी गली बन गई हूं···
अंधी गली···
बार-बार आकर वहीं खत्म हो जाने वाली
अंधी गली

आवाज़ : अनन्त तुम्हें आगाह किया जाता है···अनन्त तुम्हें ह वार्निंग देते हैं चुपचाप सरेण्डर कर दो। तुम चारों तर से घिर चुके हो, तुम चारों तरफ़ से घिर चुके हो···

[आवाज़ पर वह चौंकती है। उसे ठीक लिटाती है और दोनों हाथ उठाकर यंत्रव चलती हुई बाहर निकल जाती है]

□